

गमलयाप्राप्ति॥ विरुचिषागमन्॥ वड्जयदयूक॥ ३॥ कुरुस्ययधमदका॥ रुलम
रु॥ वड्जयानिस्त्रीयम॥ गारी॥ नक॥ गोजदरु॥ व्रीधन॥ उच्चदरु॥ कार्यचरुन॥ धनी॥
दवरुक॥ १॥ कुरुस्यद्वितीयदका॥ रुलमाह॥ लारी॥ उल्लयवदिय॥ कनक॥ गमन
दरु॥ विगनविकटविघनहास्य॥ उल्लुगहीनवचन॥ यल्लित॥ मिश्रवड्ज॥ २॥ कुरु
स्यस्ययधमदका॥ रुलमाह॥ उच्चदरु॥ कितकराषी॥ मंदराषी॥ कीलसनीन॥ अल्यवाइ
कुरुवात्॥ धनवान्॥ कल॥ वड्जमिथ्याहाषी॥ मन्दामि॥ नृपनाग॥ स्त्रीनम॥ लरु॥ ३॥ मीन

स्वसम्यद॥वर्ष३१गुरुकारि॥वर्ष३२मास१॥युवासइ४रुय॥वर्ष३३जुतिवयमाद॥वर्ष३४मश
मदगा॥वर्ष३५मास१॥नानारुय॥वर्ष३६सुन॥वर्ष३७मास३॥सर्वथलारु॥वर्ष३८यधुधनना
॥वर्ष३९मास७॥महाशोकदु४रुनय॥वर्ष४०गुरुार्थलारु॥वर्ष४१मास१०॥नानालारु॥वर्ष४२म
शम॥वर्ष४३युवासमहारुय॥वर्ष४४मास८॥द्वाननउभागयीज॥वर्ष४५मास३॥जूनकार्थलारु॥
वर्ष४६संसयदगा॥वर्ष४७मास५॥जुतिवकदगा॥वर्ष४८मास३॥महार्थलारु॥वर्ष४९मास२॥महा
शामिलकार्थदवि॥वर्ष५०मास८॥मशमदगा॥वर्ष५१मास३॥रुभाउयकायनयीज॥वर्ष५२
कीरियगायधनजलसीरुय॥वर्ष५३मास२॥सोखलारु॥वर्ष५४मास३॥विद्यागकारि॥वर्ष५५मा

स३कालिप्रिय॥वर्ष५६मास३॥विद्यार्थलारु॥वर्ष५७मास१॥कदगा॥वर्ष५८मास८॥गुरुदगा॥वर्ष
५९मास२॥कउमविग्रह॥वर्ष६०गुरु॥वर्ष६१चिददगा॥गदानमल्लजुतिनिवर्षालि८०जीवनि
॥जुतिवधमसमाक॥ १ ॥कउसुखदगा॥रुलमारु॥मद्यमूलजुतिनी॥मास२॥द्वानकश
यीज॥वर्ष६१मास१॥सुवधुदिवललारु॥वर्ष६२मास३॥द्वानिसानरुय॥वर्ष६३मास२॥लारार्थ॥वर्ष६४
मास१॥रुयमनानि विस्तृठिकावागरुय॥वर्ष६५मास८॥जुधमल्ल॥वर्ष६६मास८॥सर्वथलारु॥वर्ष६७
स२१माकरुय॥वर्ष६८मशमरुल॥वर्ष६९गुरु॥वर्ष७०मास३॥मशम॥वर्ष७१गुरु॥वर्ष७२मास८॥जु
र्थनान॥वर्ष७३लीलारु॥वर्ष७४मशम॥वर्ष७५मास२॥मिशुरुल॥वर्ष७६मशम॥वर्ष७७मास१॥

शुभिविषयहरय ॥ वर्ष १८ नाजरुय ॥ वर्ष १९ मास १ श्रीनिमिरुनक नरु ॥ वर्ष २० मास ३ यूनार्थना
जलारु ॥ वर्ष २१ संनायनाजरुय ॥ वर्ष २२ मास १ व्याकलार्थदानि ॥ वर्ष २३ गुरु ॥ वर्ष २४ मास २ मा
नालारु ॥ वर्ष २५ कनहात्रिदास ॥ वर्ष २६ युवास ४ ख ॥ वर्ष २७ मास ८ नाजगामिहरय ॥ वर्ष २८
मास ३ श्रीभनलारु ॥ वर्ष २९ मास ८ जयमानार्थदानि ॥ वर्ष ३० सुवर्णवियावला नलारु ॥ वर्ष ३१ सु
कार्थदानि कउम विग्रह ॥ वर्ष ३२ मास ८ मध्यामद ॥ वर्ष ३३ मास ३ मध्यामगुरु ॥ वर्ष ३४ सुवर्ण
रु ॥ वर्ष ३५ मास २ गुरु ॥ वर्ष ३६ मास ३ विमयाभिरुय ॥ वर्ष ३७ मास ३ कद ॥ वर्ष ३८ मास ८ नल
दिलारु ॥ वर्ष ३९ मास ३ श्रीनिमिरुन ॥ वर्ष ४० मास ८ गत्यलारु ॥ वर्ष ४१ मास २ गिनाकाहरुय ॥

वर्ष ४२ गमरुमिलारु ॥ वर्ष ४३ जसौ के ली ॥ वर्ष ४४ मास २ रंगनकृपासरुय ॥ वर्ष ४५ मास ४ वन
वियागरुय ॥ वर्ष ४६ मास १ स्कानाफिलारु ॥ वर्ष ४७ मास १ लारु ॥ वर्ष ४८ मास १ गुरु ॥ वर्ष ४९ मास ३
नरु ॥ वर्ष ५० आन्यादिसमृद्धि ॥ वर्ष ५१ विभाउयकायरुय ॥ वर्ष ५२ मध्याम ॥ वर्ष ५३ म
हाजाग ॥ वर्ष ५४ मध्यामद ॥ वर्ष ५५ कद ॥ वर्ष ५६ गुरु ॥ वर्ष ५७ लारु ॥ वर्ष ५८ मध्याम ॥ वर्ष ५९ क
द ॥ यदि नमयत ॥ सकृद्विषयिलीजीवति ॥ दानयुष्टवनत ॥ कृत्तिकउद ॥ समाक ॥ ८ ॥
अथ ॥ वर्ष ६० मास १ लारु ॥ वर्ष ६१ मास १ गुरु ॥ वर्ष ६२ मास १ लारु ॥ वर्ष ६३ मास १ गुरु ॥ वर्ष ६४ मास १ लारु ॥ वर्ष ६५ मास १ लारु ॥ वर्ष ६६ मास १ लारु ॥ वर्ष ६७ मास १ लारु ॥ वर्ष ६८ मास १ लारु ॥ वर्ष ६९ मास १ लारु ॥ वर्ष ७० मास १ लारु ॥ वर्ष ७१ मास १ लारु ॥ वर्ष ७२ मास १ लारु ॥ वर्ष ७३ मास १ लारु ॥ वर्ष ७४ मास १ लारु ॥ वर्ष ७५ मास १ लारु ॥ वर्ष ७६ मास १ लारु ॥ वर्ष ७७ मास १ लारु ॥ वर्ष ७८ मास १ लारु ॥ वर्ष ७९ मास १ लारु ॥ वर्ष ८० मास १ लारु ॥ वर्ष ८१ मास १ लारु ॥ वर्ष ८२ मास १ लारु ॥ वर्ष ८३ मास १ लारु ॥ वर्ष ८४ मास १ लारु ॥ वर्ष ८५ मास १ लारु ॥ वर्ष ८६ मास १ लारु ॥ वर्ष ८७ मास १ लारु ॥ वर्ष ८८ मास १ लारु ॥ वर्ष ८९ मास १ लारु ॥ वर्ष ९० मास १ लारु ॥ वर्ष ९१ मास १ लारु ॥ वर्ष ९२ मास १ लारु ॥ वर्ष ९३ मास १ लारु ॥ वर्ष ९४ मास १ लारु ॥ वर्ष ९५ मास १ लारु ॥ वर्ष ९६ मास १ लारु ॥ वर्ष ९७ मास १ लारु ॥ वर्ष ९८ मास १ लारु ॥ वर्ष ९९ मास १ लारु ॥ वर्ष १०० मास १ लारु ॥

यस्य ॥ वर्ष १० मास ॥ कृद ॥ वर्ष १२ श्री लारु ॥ अर्थसम्यद ॥ वर्ष १३ मास २ शुक्र
द ॥ वर्ष १४ वर्ष विद्या रुय ॥ वर्ष १५ मास ३ नाग ३४ ख ॥ वर्ष १६ शुक्र ॥ वर्ष १७ मास १ रु ॥ वर्ष १८
य ॥ वर्ष १९ शुक्र ॥ वर्ष २० कृद ॥ वर्ष २० मास ८ नाग ४ पी ॥ वर्ष २१ मास ३ श्री वरु नयान लारु ॥
वर्ष २२ दान विद्या दि रुय ॥ वर्ष २२ मास ८ रुयत नागि १ रुय ॥ वर्ष २३ मास ३ अति लारु ॥ वर्ष २३
यवास ३४ ख ॥ वर्ष २४ मास ८ लारु ॥ वर्ष २५ मास ८ श्री वरु नाग ॥ वर्ष २६ अर्थ लारु ॥ वर्ष २७ मास २
शुक्र अर्थ लारु ॥ वर्ष २८ मास ३ मरु रुय विग्रह ॥ वर्ष २९ विग्रह द ॥ वर्ष ३० मास ८ मरु नयान
कि ॥ वर्ष ३१ मास १ वरु वरु नयान रुय ॥ वर्ष ३२ मास ८ शुक्र द ॥ वर्ष ३३ मास ८ पूरा अर्थ हानि

कान रु ॥ वर्ष ३३ मास १ शुक्र ॥ वर्ष ३४ अर्थसम्यद ॥ वर्ष ३४ दानाति सानव वरु वरु रुय ॥ वर्ष ३५ मा
स ८ कृद ॥ वर्ष ३६ मास ३ नाग पूजक ॥ वर्ष ३७ मास १ नाग ३४ ख ॥ वर्ष ३८ मास १ रु ॥ वर्ष ३९
य ॥ वर्ष ४० मास ३ अति रुय ॥ वर्ष ४१ शुक्र ॥ वर्ष ४२ श्री विमिर्ल नसा कार्थ हानि ॥ वर्ष ४३ वरु मदी
जा ॥ वर्ष ४४ शुक्र ॥ वर्ष ४५ सर्व अर्थसम्यद ॥ वर्ष ४६ रुय ॥ वर्ष ४७ विग्रह रुय ॥ वर्ष ४८ मरु ॥ वर्ष
४९ लारु ॥ वर्ष ५० शुक्र ॥ वर्ष ५१ विगार्थ नाग ॥ वर्ष ५२ शुक्र ॥ वर्ष ५३ शुक्र ॥ वर्ष ५४ मरु रुय ॥ वर्ष
५५ मरु ॥ वर्ष ५६ लारु ॥ वर्ष ५७ कृद ॥ वर्ष ५८ विग्रह संयद द ॥ यदि नम्यति दासकति
वर्ष ५९ ली जीवति ॥ अति शुक्र द ॥ समाक ॥ २ ॥ ॥ अथ मरु रुय लारु ॥

॥ अहिसूइरु, धिरेरुका, धूरु इगकी उगगा
रुवाति ॥ ॥ मसूइरु, मेजीयक, धनवान, धर्मनग सुखीरुवति ॥ ॥ धिरेरुसूइरु, धिरे
रुका, धनान्वितारुवति ॥ ॥ वसूसूइरु, नानाभासु विभानदारुवति ॥ ॥ वासिसूइरु
वेलवान, रागीरुवति ॥ ॥ विश्वसूइरु, युरुवइयतायवान, रुवति ॥ ॥ वक्षसूइरु, वि
द्वान, वितयरागीरुवति ॥ ॥ विधिसूइरु, विविधरु, वितयीरुवति ॥ ॥ गतमसूइरुः
यूपेयीय, धार्मिकयरुधियारुवति ॥ ॥ मूनइतसूइरु, विद्वान् नृपयस, धनवान् वलीरु
ति ॥ ॥ वक्रिसूइरु, जनवादाजयस, यष्टितारुवति ॥ ॥ नकचजसूइरु, नककार्यकम

लमतीरुवति ॥ ॥ वनसूइरु, यागसायी, दण्डधर्मनग, जिनदियारुवति ॥ ॥ अर्य
ससूइरु, अर्यगील, सत्ययुद्धि यष्टितारुवति ॥ ॥ यानिसूइरु, वीर्यवान, धार्मिकारुवति ॥
॥ गिनिसूइरु, दवरुक, काधिरुवति ॥ ॥ अजयादसूइरु, अजादेद्वि, ४ सस्यदवाक
वति ॥ ॥ अदिवृषसूइरु, गरीजविद्यायायुद्धि रुरुवति ॥ ॥ वृषासूइरु, यूर्गुविलवान
सीयिय, वरुयजारुवति ॥ ॥ अग्निमूइरु, वसानकानरुधन, यारुवति ॥ ॥ यमसूइरु
यमनकरुकारुधियारुवति ॥ ॥ अग्निमूइरु, वरुहागी, वृटीलगरुवति ॥ ॥ विश्वरु
सूइरु, उदिकानी, नृपमानारुवति ॥ ॥ चंदसूइरु, चंदहासदाचंदयष्टिमानारुवति ॥ ॥ अ

॥ जिवमूर्तु, वद्विवन, धर्मनगरुवति ॥ ॥ जीवमूर्तु, वद्विवन जीवि, धर्मः
 वद्विवनति ॥ ॥ विष्णुमूर्तु, विष्णुक, विष्णुनाकमिहवति ॥ ॥ तमयाममूर्तु, तमयामि
 णिको, धनवान्मुखीरुवति ॥ ॥ लक्ष्मिमूर्तु, विविगवन् नानालंकात्रियारुवति ॥ ॥ समीन
 नमूर्तु, तद्विही, नातावन् प्रिय, धार्मिकारुवति ॥ ॥ ॐ हिसूर्तु, हिसमाक ॥ ॐ
 (नूद १ अदि २ मिग ३ यिग ४ वसू ५ वावि ६ विष्णु ७ वधा ८ विप्रित ९ गमस्व १० यून ११ वद्वि
 ॥ तर्कचंन १२ वचन १३ अयम १४ याति १५ ॥ दितया ॥ ॥ गिनिस १ अजयाद २ अदिच ३
 पूषा ४ अग्नि ५ यम ६ अग्नि ७ विष्णु ८ तर्क ९ अदि १० जीव ११ विष्णु १२ तिम १३ तद्वि

१९ समीन १९ ॥ नारीया ॥ ॥ समीन २० २ योम ३ गुक ४ सकस्यानि ५ यूर्वहा ६ तद्वि
 धिया ७ वधदिन ८ धक ९ जातक १० सयू ११ लिखित १२ लगन १३ दिव १४ कि १५ लिमान १६ नान
 स १७ पुत्र्या १८ आया १९ दिन २० ॥ ॥ गुरुमस्तु सर्वदा कल्याणमस्तु ॥ ॥ गुरु ॥
 १ वध २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०
 ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९०
 ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२०

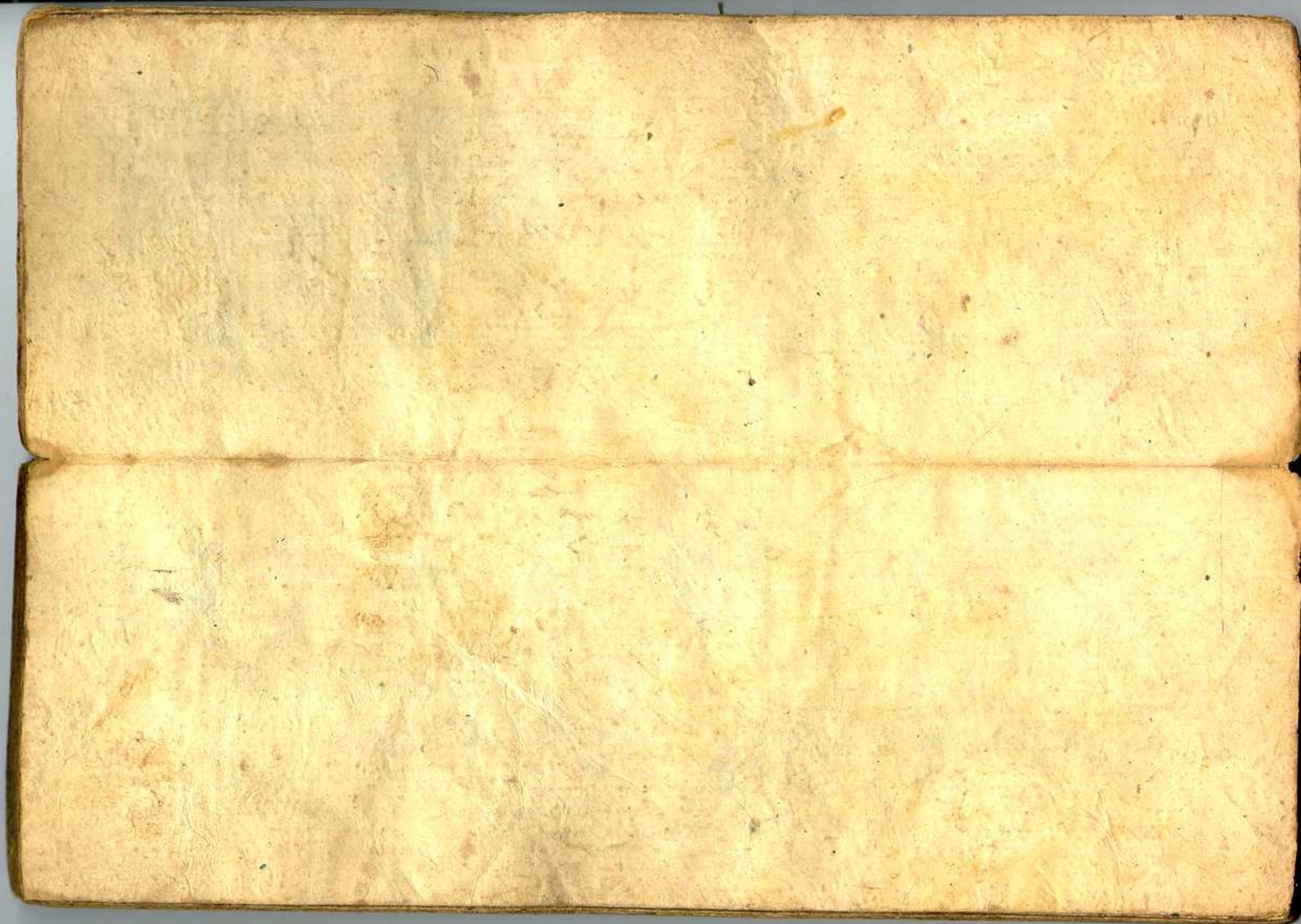
[illegible]

अ	दि	रु	उ	रं	म	स	जु	न	द	ए	दा	उ	व	यू	पु	दि	रु	व	यं	म	स	जु	न	द	ए
वि	वा	नं	व	व	का	ग	वि	वा	नं	व	व	का	ग	वि	वा	नं	व	व	का	ग	वि	वा	नं	व	व
व	का	ग	वि	वा	नं	व	व	का	ग	वि	वा	नं	व	व	का	ग	वि	वा	नं	व	व	का	ग	वि	वा

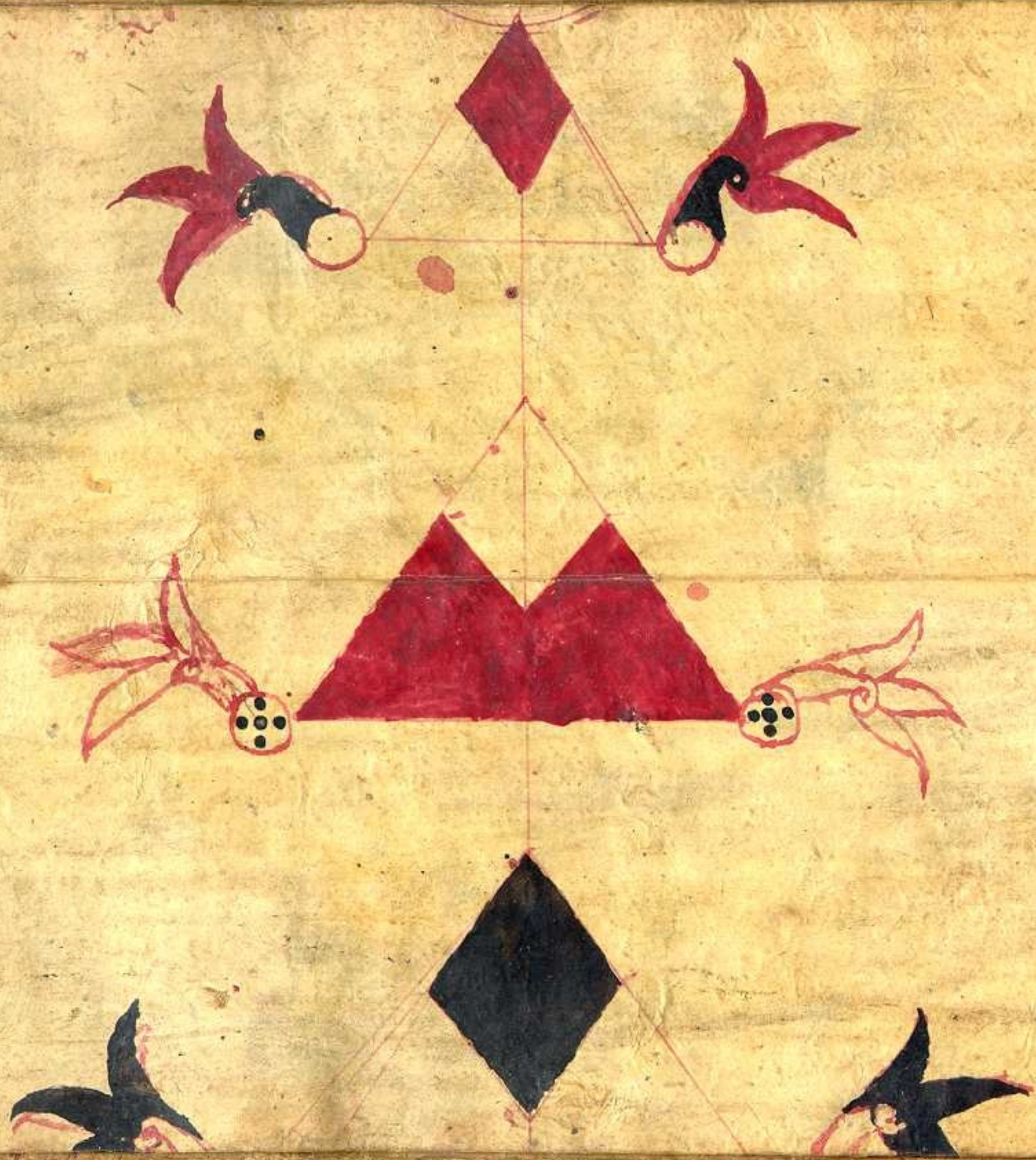
॥ श्रीदिनकराय नमः ॥ श्रीदिनकराय नमः ॥ श्रीदिनकराय नमः ॥

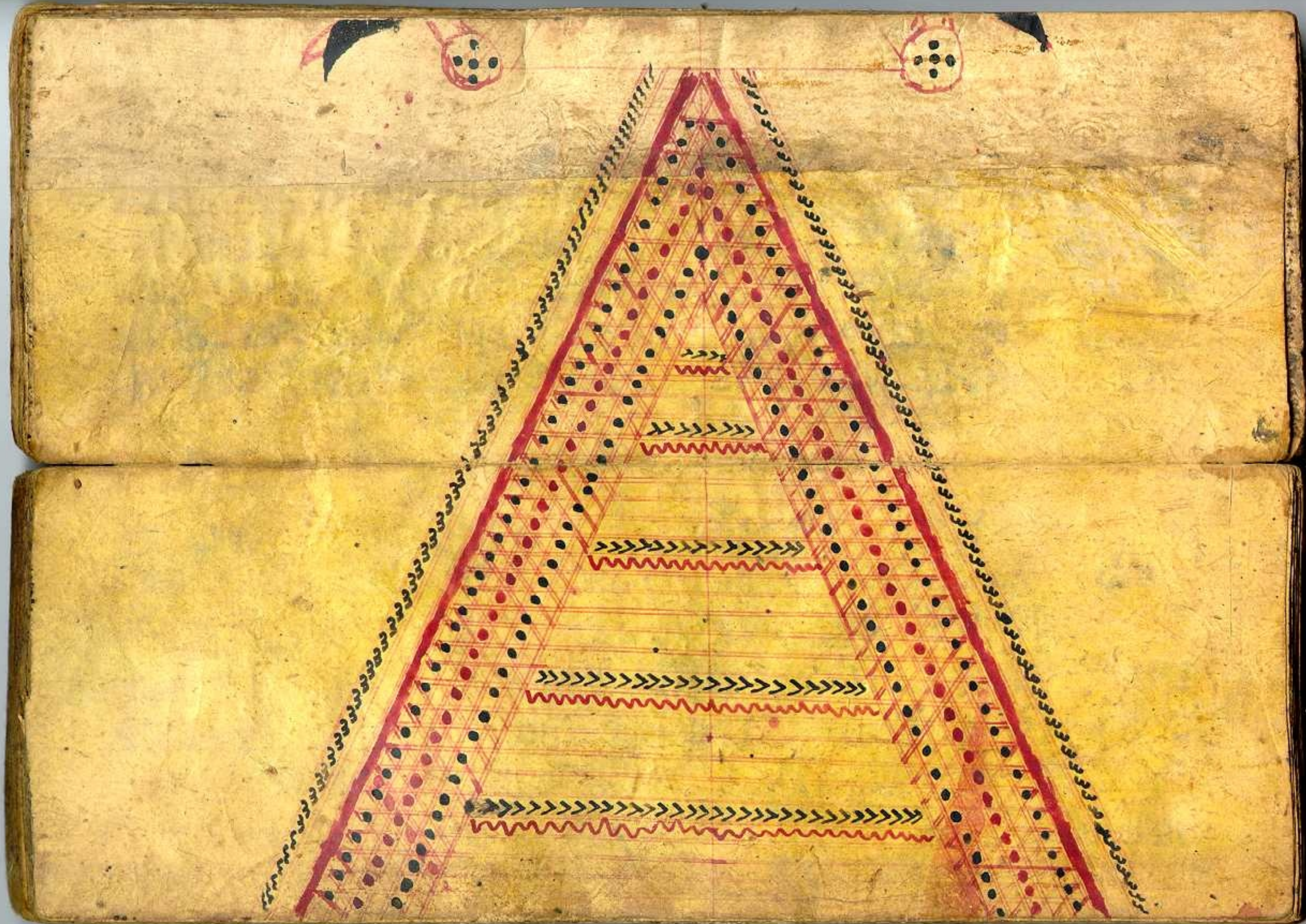












[illegible]

कग्रहयं, नाशयं, वृक्ष, पुत्रया, यन्त्रिसंज्ञकसं, पूर्वउदयसंतं नशना ॥ नादू दूटसथन, ६०००
तंदाव, कंडू दूटसिद्धि ॥ धनतनदिनसजाय नयूया, तत्कान नयसिद्धि ॥ ॥ सनितलि, वाचान द्वाया
तत्कान नय ॥ ननग्रहडाकू दूयायाय ॥ जायनयूया वलान, नाशुद्धसयाय, याया (गम, द्यटि, विद्यटि, ००
०० नान नय ॥ ध ०० ०० नन, सूर्यादिजुष्टग्रहयां, कुकिद्यटि, विद्यटि, यतंतयाव, ०० ०० ननद्यटिनथं
धनतंतुल, काधनतं विद्यटिनगुल, काधूसमूयन ०० धत, लव्वनथं धसतंत, दधनदधमंत, (धमूय
न ०० धताव, लव्वनथं धसमदाव, हाग ०० लव्वद्यटि, (गमविद्यटि, धद्यटि, विद्यटि, सूर्यादिसकग्रह

यंत. यायायाया. नागिया. जूकन. नागिस तंनमाल. ग्वनागियालंकादयसधार्त. उलंकादयवरुगका
य. याया. (गमसर्जिल ३० गुल. लखदाका. तंठतया. नागिया. कावनजूंझयांठन. (गमसगुल ६० लखद्यटि.
यनगुल ६० लखविकला. धनागि. जूंझ. द्यटिविद्यटि. गत्काललग्नभाय ॥ **॥ यननयि ॥** जूकनयायम
दाया. गत्काललग्नभाय ॥ जायनया ०० द्यटिसमष्टि ०० गुल. द्यटिनर्तन. (धसूर्यउदयरुयालंकादः
यनरुग. (गमसगुल ३० लखजूंझ. (गमसगुल ६० लखद्यटि. (गमसगुल ६० लखविद्यटि. धनागि. जूंझ
द्यटि. विद्यटि. जूकनयायमइया गत्काल. लग्नभायरुया ॥ धतनदिनस. जायनयूया गत्काल. लग्नभा

यसिद्धि ॥ **॥ ॐ ॥** **॥ लग्नादिन. दशकगुलभाय. यत्रियाटिध. (धंरुना ॥** **॥ लग्नभाय ॥** जूंझगम
ष्टिगुल ६० द्यटिनर्तन. (धरुग १८०० लखसकित १००० द्यादा नागि जूदिनटि स्यंतरुना ॥ **॥ दानाभाय**
॥ लग्नभाय जूंझसमष्टिगुल ६० द्यटिनर्तन रुग २०० विसमनागिया. लखधूनावनसा. सिंह ॥ द्वि १ वनसा. क
कट ॥ समनागिया धूनावनसा ककट ॥ द्वि १ वनसा सिंह ॥ **॥ आदित्यादिसकग्रहयां. जूंझसमष्टि ०० गुलः**
॥ द्यटिनर्तन रुग २०० लखधूनावनसा. धमयादा नागिसंत ॥ द्वि १ वनसा. धमयादा नागिनलिधूनागिस
त ॥ **॥ इकांभाय ॥** लग्नादिसकग्रहयां. जूंझसमष्टिगुल ६० द्यटिनर्तन. रुग ६०० लखधूनावन

सा ॥ वादा नानि सत ॥ द्वि ॥ वनसा, वादा नानि नटा सत ॥ नस्य श्वनसा, वादा नानि नयुसग ॥ उक्ता न आसि
 द्वि ॥ **नर्वा न आय** ॥ लग्नसदिगत, सक ग्रहयां, जूग सयष्टि गुल ६० द्यटिन तन, राग २०० लखसद्धि १ नर्वा
 दावदिय ॥ वादा नानि मखा १ सिंह १ मन्तु रथात रुनसा, मखा दित लखगा दियानन ॥ वादा नानि, सकन १०
 दम २ कन ६ धत रुनसा, सकन दित, लखगा दियानन ॥ वादा नानि, उल १ करु १ मिथून ३ धत रुनसा
 उला दित, लखगा दियानन ॥ वादा नानि, कर्कट ३ दृष्टिक रमीत १२ धत रुनसा, कर्कटा दित, लखगा दि
 यावत ॥ धनत, नर्वा न आसिद्धि ॥ ॥ **दादना न आय** ॥ लग्नदिसक ग्रहयां, जूग सयष्टि गुल ६० द्यटिन तन

राग १५० लखसद्धि नर्वा दाव, वादा नानि जादित दित्यं ॥ ॥ ॥ ॥
नर्वा न आय ॥ ॥
 १ म ज १ वि ३० **सर्वा न आय** ॥ लग्नदिसक ग्रहयां, जूग सयष्टि गुल ६० द्यटिन तन, राग २२०
 १० क ग १ म २१ लखसद्धि नर्वा दाव, वादा नानि जादित दित्यं ॥ सर्वा न आसिद्धि ॥ ॥
 १८ म ८ र मी २० **नर्वा न आय** ॥ लग्नदिसक ग्रहयां, जूग सयष्टि गुल ६० द्यटिन तन, राग ६० ल
 २१ मि व १ क १२ खसद्धि नर्वा दाव, राग १२ (गमदका, वादा नानि, विसम रुनसा, मखा दित दि
 २० उ रु १ द १ र्यं ॥ वादा नानि सम रुनसा, उला दित दित्यं ॥ मो नर्वा न आसिद्धि ॥ ॥
 विसम कालाव ॥ सप्रथं दाव ॥

गगनगम्यतिथिः ॥ तत्कालसूर्यदूटन, तत्कालचन्द्रदूटसयायाव, नागिसिंहा ३० जूगतनर्तन, यून
महिगुल ६० द्यटिनर्तन, यूनगुल ६० विद्यटिनर्तन, राग ३२०० लक्षसङ्कित १ तंदाव, यतियदादिति
थिजंक, थथूनकायायाव, नर्तसंरागकाय, चन्द्रकुकि स, सूर्यकुकिनयायावराग, थननर्तसंराग
लक्षद्यटि, विद्यटि, थंथूगन, काथूगम्यभाय ॥ थतनतिथिगतगम्यसासिद्धि ॥ ७ ॥ गगनगम्यन
कणकाय ॥ चंद्रदूटस, नागिसिंहागुल ३० जूगतनर्तन, यूनगुल ६० द्यटिनर्तन, यूनगुल ६० विद्यटि
नर्तन, राग ३८००० लक्षसङ्कित १ तंदाव, जूधिद्यादिनकण, थंथूनकायायाव, नर्तसं चंद्रकुः

किनराग, लक्षद्यटिविद्यटि, थंथूयागुलिगत, काथूयागुलिगम्य ॥ थतनगतगम्यनकणसासि
द्धि ॥ ॥ गगनगम्ययागकाय ॥ चंद्रदूटस, सूर्यदूटनर्तंदाव, नागिसिंहागुल ३० जूगतनर्तन
यूनगुल ६० द्यटिनर्तन, यूनगुल ६० विद्यटिनर्तन, राग ३८००० लक्षसङ्कित १ तंदाव विष्कर्हादियाग
भावनकायायाव, रागकाय, चंद्रकुकि स, सूर्यकुकिन, तंदाव, थतराग, नर्तसं, थंथूयालक्षद्या
कागतभाय, काथूयालक्ष गम्यभाय ॥ थतनगतगम्ययागसासिद्धि ॥ ॥ यथायूसाय ॥ नके
रगतद्यटिविद्यटि, थिकायाव, थन १२० गुल, विकलास, मूयन ६० थंते, लक्षन, थथूवामून

थं धूसराग २० लक्ष्मका, वर्ष, (गमसवा नदगुल १२ राग २० लक्ष्मास, (गमसर्जिगुल ३०
राग २० लक्ष्मदिन, वृत्तगुल ६० लक्ष्मद्यटि, थवर्ष मास, दिन, द्यटिन, (थ १२० (गमधनय, (गम
नया (गमका, वर्ष, मास, दिन, द्यटि, यत्र मायुष्ययशः ॥ ॥ सुनादय मूलदशाया ॥ यत्र
मायुष्यवर्षसराग १२० लक्ष्मवर्ष, (गमसगुल १२ मास नर्तन, राग १२० लक्ष्मास, (गमसगुल ३० दिन न
र्तन, राग १२० लक्ष्मदिन, (गमसगुल ६० द्यटिनर्तन, राग १२० लक्ष्मद्यटि, थवर्ष मास, दिन, द्यटि,
नवयदयागुलका नतकस्ययन ॥ युतकाल, सू ६ व १० जू १ ना १८ द १५ ग १२ व ११ क १ सु २०

थगुलका नत, थवायगयाक्रमन, कतिक्कतिगुलयादतस्य, थसुनादयधायशः ॥ ॥ थसु
नादयकायाव, नदगुयाततिन, मालगुलि, दयातयाव, (थ (थतंदयदाव, यत्र मायुष्यवर्ष ३, उ
तमदतसामजीव ॥ ॥ जूलुर्दशाया ॥ (गमकं यदया जूलुर्दशायायशः ३, उ क यदया, लना
दयविकायाव, राग १२० लक्ष्मकागसा, वर्ष, (गमसगुल १२ मास नर्तन, राग १२० लक्ष्मास, (गमस
गुल ३० दिन नर्तन, राग १२० लक्ष्मदिन, (गमसगुल ६० द्यटिनर्तन, राग १२० लक्ष्मद्यटि, थवर्ष मास
दिन, द्यटि, यदयागुलकालन, गुलयादाव, (थ (थतंदयदाव, दयव उतंदयव, दय ३ उतंदयवसा

जीव उतम उतम साम जीव ॥ धतन जलुर्दल सा सिद्धि ॥ ॥ ~~युधिजीवसूत्र~~ ~~युधिजीवसूत्र~~ विव न न शीखीः
तथा ३२८ १ समस्त नल संया र्ज कलिका ना विधीयते ॥ ३२८ १ ~~युधिजीवसूत्र~~ ~~युधिजीवसूत्र~~ न न तं दात्र कलि
गता दधाय ॥ ३२९ १ ~~युधिजीवसूत्र~~ ~~युधिजीवसूत्र~~ न न तं दात्र विक्रमा दधाय ॥ ३३० १ ~~युधिजीवसूत्र~~ ~~युधिजीवसूत्र~~ न न
तं दात्र लक ना जवर्ष आय ॥

५

पवन

आयु ४८ १ मृग पीर्य दल नाथ न क कय ना दध वे न वर्य न दूर व ग नि प्रमान क इहो धन
सौर्य धन न व द न ध व स र्य व क नी मृग य ४८ १ न विह ल स व उ न व र्ग की र्ति ध ना ना य ॥

१८ लकारवर्णः ॥ ३२ ॥

ल	सू	व	ज	वृ	वृ	शु	ग
१	१	२	१	१	३	७	१
२	२	३	२	२	४	८	२
३	३	४	३	३	५	९	३
४	४	५	४	४	६	१०	४
५	५	६	५	५	७	११	५
६	६	७	६	६	८	१२	६
७	७	८	७	७	९	१३	७
८	८	९	८	८	१०	१४	८
९	९	१०	९	९	११	१५	९
१०	१०	११	१०	१०	१२	१६	१०

१९ लकारवर्णः ॥ ३२ ॥

ल	सू	व	ज	वृ	वृ	शु	ग	व
१	१	२	१	१	३	७	१	३
२	२	३	२	२	४	८	२	४
३	३	४	३	३	५	९	३	५
४	४	५	४	४	६	१०	४	६
५	५	६	५	५	७	११	५	७
६	६	७	६	६	८	१२	६	८
७	७	८	७	७	९	१३	७	९
८	८	९	८	८	१०	१४	८	१०
९	९	१०	९	९	११	१५	९	११
१०	१०	११	१०	१०	१२	१६	१०	१२

१८ ॥ ६ ॥ क, उ, उ ॥
 १९ ॥ १० ॥ मा, ह, य ॥
 २० ॥ १ ॥ म, वि, ध ॥
 २१ ॥ १८ ॥ आ, सा, न ॥
 २२ ॥ १६ ॥ य, वि, यू ॥
 २३ ॥ १२ ॥ अ, अ, उ ॥
 २४ ॥ ११ ॥ अ, अ, य ॥
 २५ ॥ १ ॥ म, म, अ ॥
 २६ ॥ २० ॥ य, यू, रु ॥

२० लकारवर्णः ॥ ३२ ॥

ल	सू	व	ज	वृ	वृ	शु	ग
३	३	३	२	१	१	३	३
४	४	४	३	२	२	४	४
५	५	५	४	३	३	५	५
६	६	६	५	४	४	६	६
७	७	७	६	५	५	७	७
८	८	८	७	६	६	८	८
९	९	९	८	७	७	९	९
१०	१०	१०	९	८	८	१०	१०
११	११	११	१०	९	९	११	११
१२	१२	१२	११	१०	१०	१२	१२

२१ लकारवर्णः ॥ ३२ ॥

ल	सू	व	ज	वृ	वृ	शु	ग
१	३	३	१	३	७	७	१
२	४	४	२	४	८	८	२
३	५	५	३	५	९	९	३
४	६	६	४	६	१०	१०	४
५	७	७	५	७	११	११	५
६	८	८	६	८	१२	१२	६
७	९	९	७	९	१३	१३	७
८	१०	१०	८	१०	१४	१४	८
९	११	११	९	११	१५	१५	९
१०	१२	१२	१०	१२	१६	१६	१०

२२ लकारवर्णः ॥ ३२ ॥

उदित ॥ ॥ बाल ॥
 उमति ॥ ॥ कमाल ॥
 आमति ॥ ॥ युवा ॥
 संस्था ॥ ॥ दृष्टि ॥
 जूट ॥ ॥ नूतिदृष्टि ॥

अथ का. ल. स. र्का. ल. १० नवा. ल. १० द्वाद. र्का. ल. १० त्रि. र्का. ल. ३ मू. र्का. ल. २ व. ला. र्का. ल. १० ज. न. ॥ ॥ अथ सर्वमभि
 नू. द. प. था. ॥ श्री. वि. क्र. मा. दि. त्वा. स. म. व. १००० श्री. या. नि. षा. द. स. म. व. १००० श्री. ध. या. सु. न. या. लि. क. र्का. ल. १० ख. व. ना. द. स.
 म. व. १००० वि. रु. व. स. म. व. १००० उ. ल. मा. य. ॥ द. क्रि. ल. १० म. ल. यी. म. स. र्का. ल. १० अ. र्का. ल. १० म. ल. यी. म. स. र्का. ल. १०
 दि. न. ॥ त्रि. ग. न. द. ॥ ॥ कि. र्का. ल. १० न. दा. दि. म. र्का. ल. १० ल. र्का. ल. १० य. ध. मा. दि. त्वा. स. म. व. १००० न. वि. हा. ना. र्का. ल. १० अ. नि.
 त्वा. स. र्का. ल. १० ॥ त. दा. जा. त. र्का. ल. १० ल. र्का. ल. १० ह. ना. ॥ द. क्रि. ल. १० न. दा. दि. म. र्का. ल. १० द्वाद. र्का. ल. १० त्रि. र्का. ल. १० स. र्का. ल. १० मी. ना. ॥ यी. र्का. ल. १०
 स. म. व. १००० न. वि. हा. ना. र्का. ल. १० अ. नि. त्वा. स. र्का. ल. १० ॥ त. दा. जा. त. र्का. ल. १० ल. र्का. ल. १० ह. ना. ॥ द. क्रि. ल. १० न. दा. दि. म. र्का. ल. १० द्वाद. र्का. ल. १० त्रि. र्का. ल. १० स. र्का. ल. १० मी. ना. ॥ यी. र्का. ल. १०

सुमनधीनवाक् ॥ मइकनद ॥ मुनिमिरुन ३४ स्वर्गवती ॥ जगत्सुखाव ॥ आहुवातयिरु ॥ आहानचिका
॥ सावित्राजन ॥ दधि मधू द्यत मस्य मांहा सुनायिय ॥ नागविका ॥ दानदाद्यनिजलूल ॥ कामलवा
धि ॥ कङ्क कङ्क अतिसानरुवति ॥ अकालमस्य यथमवर्ष दानातिसान ॥ वर्ष दधिचतुष्टयनरिज
ति ॥ वर्ष दानदाद्यनिजलूल ॥ वर्ष हापु नमुद्रानरुय ॥ वर्ष कासै खास ॥ वर्ष ११ कृदिनाग ॥
जतयदिनमयति यमाय वर्ष १०० हातवर्माणि जीवति ॥ मन्त्रमा म्निजमास आहिनीनक्षत्र बूधदि
नमयति ॥ ॥ आहिनीनक्षत्रमास ॥ यवतानक ॥ हातसंस्त ॥ वस्त्राविममूर्धु ॥ अजायति

रुल

वता ॥ सोम्याभिदवता ॥ हातवाजायधी ॥ गम ॥ सर्वयुक्तासंस्त ॥ कथिनासत ॥ मानूयजाति ॥ नागसख
॥ यीतवर्ष ॥ पूर्वदानयथ ॥ लुकयै दैत वधनागियत्रियुर्षु ॥ सोम्यनक ॥ मध्वी ॥ यियदर्शति ॥ धीनवी
र्य ॥ यासादिक ॥ गीहीनदृष्टि ॥ वदु मिय ॥ सखवागी ॥ धनरागी ॥ कृषकमौयजीवित ॥ सखरागी ॥ यधुरा
गी ॥ जतुलार्थरुविद्यति ॥ वदु यूर ॥ कीउदन ॥ मधूनयिय ॥ कृडकानू ॥ धीनवाक् ॥ अतिथिगुनयूजक ॥
द्वियक्राभ ॥ गीतवाद्ययिय ॥ धर्मिष्ठ ॥ हासु ॥ जगत्सुखाव ॥ आहुवातयिरु ॥ आहानसावित्राजन ॥ दान
द्यत मधूयिय ॥ नागजानदाद्य ॥ कृङ्क वेसर्ष ॥ कृदिनाग मस्यवाक ॥ जतनागविका ॥ अकालमस्यवर्ष

मूखयाक ॥ वर्ष ३६ नदाद्यथाभि ॥ वर्ष १८ कष्टनागकरु ॥ वर्ष २० श्रीनादिवकुशदहय ॥ वर्ष २० धन
कय ॥ यनमायूवर्ष ११ मनल, मार्गनिनमास, उत्कृष्टनागनमयति ॥ ॥ मगनिननकगुरुलमा
ह ॥ शिकानक ॥ मगवाहात ॥ दवजाति ॥ नागसख ॥ यीगनकवर्ष ॥ यक्षदणमूडरु ॥ मगयलीग
ह ॥ दमनागियाद २ शुक्रकेश ॥ मिथूननागियाद २ वृषकेश ॥ अरुणाजात ॥ भीमस्वातन ॥ भस्मिनत ॥
कर्मवातिआयजीविन ॥ अर्थरुणी ॥ खासादिक ॥ दर्शनिय ॥ मभावी ॥ श्रियदर्शन ॥ जसकाचून्य ॥ विष्णु
नगुनजस्वी ॥ गंहीनवीर्य ॥ यशुयारु ॥ दवयूजत ॥ मानाधिक ॥ चनविर्ह ॥ तिदविक ॥ अग्निनाम ॥

मेधूनयिय ॥ उच्चस्वन ॥ गीतवाअयिय ॥ यूनमयदिमिस्वरुव ॥ हासित ॥ यनविविहगुय ॥ जगस्वरुव
॥ वउषरुयार्थवनिनिष्ठिका ॥ वरुयू ॥ ॥ निरुक्कआहाज, दभि, मधू, गुंठ, द्या, जीनयिय ॥ मत्स्यः
मार्ग, वरुयू ॥ ॥ भउवागयिरुनाग ॥ अतिसान ॥ कसनयाभि ॥ मूखकुक्कुदनदाद्य ॥ जगनागरुविश्र
ति ॥ अक्रानमल ॥ वर्ष ११ गलुमालकन ॥ वर्ष १८ अतिभाजनजीवसंनय ॥ वर्ष ११ श्रीनतयाद्यात, वउषद
वा ॥ वर्ष २१ गुरुय ॥ तीनायसव ॥ यनारिवात्रुनिमिरुनमल ॥ वर्ष ३० दनदाद्यनरुनाग ॥ व
र्ष १० अक्षानगमलकाल, कलिसेरुखलमुनरिहयति ॥ यनमायूवर्ष ११ मनल, मार्गमासकृष्ण

॥ सूर्योऽष्टममयमयति ॥ १ ॥ **आयानकगुरुलमाह ॥** एकतात्रक ॥ त्रिकसम्मान ॥ यत्र
चत्वारिंशमहर्क ॥ चतुर्दशवता ॥ अंगत्रयद्वयता ॥ वज्रिष्ठ ॥ सूर्योऽष्टम ॥ स्वानसख ॥ मान
मोक्ष ॥ यत्र द्वात्रिंशत् ॥ अथवा कुरुवर्तु ॥ वधक्षेत्रसर्वत्र ॥ मिथूननालियनियुक्तु ॥ नतसुता
नात ॥ आलादिक ॥ दलनीय ॥ विष्णुत्रय ॥ तजस्वी ॥ वरुणाह ॥ वृद्धिवक्त ॥ धूरुकाभात्र ॥ वृष्ट्याः
न ॥ विषमदाक ॥ कुरुवर्तु ॥ अर्णककावि ॥ नोदकर्मालिविक्त ॥ नित्यकनरुप्रिय ॥ सध
नप्रिय ॥ कोडरुप्रिय ॥ अरिमानि ॥ नीचकुलप्रिय ॥ लूक ॥ मधवी ॥ धितानाशन ॥ सवकलागी ॥ अ

सकक ॥ कर्मनिश्वसि ॥ अर्थमाकर्षी ॥ गीतवाद्यप्रिय ॥ गन्धमालाप्रिय ॥ चतुर्लार्या ॥ कृषकर्मप्रिय ॥ विन
यन्मयदिस्तीस्वराव ॥ वालरावदत्रिद ॥ यन्त्रास्त्रस्त्री ॥ आहवत्रिका ॥ सवारुक्षलसं प्रिय ॥ भाववातप्रिय ॥ न
गविका ॥ कृदिनाग ॥ नगनाग ॥ गन्धनाग ॥ अनासीरुगन्दन ॥ एतस्वराव ॥ अकात्रमल्लवर्ष ॥ शिज्याः
मिथुनप्रियदहन ॥ वर्ष ॥ दक्षातिमातनयदि ॥ चतुष्टयदतयदिरियति ॥ वर्ष ॥ रुद्रदानलनदीप्रवाह
न ॥ वर्ष ॥ दत्तसन्निधा ॥ तजीवसं गाय ॥ वर्ष ॥ यनारिवात्रभूल ॥ एतयदितमयति ॥ यत्रमायुर्वर्ष ॥
मन्त्र ॥ माननिजमास ॥ रुद्र ॥ चतुर्दश ॥ गनेष्ट्रयदितमयति ॥ २ ॥ **यूनवृत्तनकगुरुलमाह ॥** द्विता

प्रथमः ॥ विलसतः ॥ विना नतः ॥ विंशतिमूर्तिः ॥ दृढस्यतिदवता ॥ शोभाभिदवता ॥ नूयमखायली ॥ गण
 ॥ विदः ॥ मूतः ॥ धूर्तः ॥ मूतः ॥ मूतः ॥ दवजातिः ॥ धूर्तनिधुमनः ॥ चंदकणसर्वगः ॥ कर्कटजातिः
 नियुक्तः ॥ यीगवर्तुः ॥ अथवा कसूवर्तुः ॥ तनसूताजातः ॥ मधुवीवर्तुः ॥ वानरावद्विदः ॥ यथात्म
 स्वी ॥ स्वल्पवृद्धिः ॥ भस्मगीतः ॥ दवयूजकः ॥ अर्द्धनयियः ॥ यष्टितः ॥ वाक्यटः ॥ दानगीलः ॥ भस्मनतः ॥ प्रियदः
 नतः ॥ स्वल्पतजः ॥ स्वात्मगानकः ॥ द्विष्टकाभः ॥ कसूवर्तुः ॥ कयिनकः ॥ सुखजानसः ॥ अगीलः ॥ कतः ॥ मइ
 मरु ॥ कुनरु ॥ मूतः ॥ मगी ॥ कलिप्रियः ॥ अहिमानी ॥ लुडालः ॥ कडुकातः ॥ ज्ञानविर्तुः ॥ मीधुसंगुष्ठः ॥

[illegible]

कर ॥ दिन मयति ॥ ॥ अथ वनकण्डलमाह ॥ लक न क ॥ तिलक संस्कार ॥ वृद्धति शु
मगु ॥ यवदल मूक ॥ सय्ययनी ॥ ग ॥ स्वदवतानाग ॥ शुक्राभिदवता ॥ काकवाहान ॥ साङ्ग न सत्य ॥
नाक्षसजाति ॥ गीतवर्ण ॥ अथ क मूवर्ण ॥ वंद क मूर्धन ॥ कर्कट नागियनियूर्ण ॥ ह म व न नाग संस्कार
॥ वनसताजात ॥ अल्यतज ॥ क म ग ॥ य न हा य नित ॥ म इ म ह ॥ मी नि मि ल न इ ४ स्वरुवति ॥ द्विरुय
॥ व इ यू ॥ अति नारी ॥ क न ह यिय ॥ विषम विरु ॥ य व ॥ खल बा ॥ ० २ शनि ॥ असत्य यतायी ॥ अकसा
क लि यिय ॥ वृद्ध कानू ॥ य नू यय दि स्त्री स्वरुव ॥ कोउ ह न यिय ॥ म भा वी यिय दर्शन ॥ चल विरु ॥ म मि

४ ॥ क यिल क ॥ न कया ल क ॥ न क न ॥ ज न व ल ॥ य न नी ॥ मे धू त यिय ॥ ज न स्वरुव ॥ आ हा न म धू या य
की न द धि द्यु ग गु ॥ म ल मी ग स न यिय ॥ भा उ वा त ना ग ॥ ना ज रु य ॥ ग रु रु य ॥ क कि ना ग ॥ क टि लू ल ॥
क लु यि मि ॥ अति सा न ॥ अ कान म लू व र्म ॥ मू ख या क ॥ व र्म ॥ ग रु रु य ॥ क न ल म लू ॥ व र्म ॥ उ य न रु रु य
॥ म हा य मि कं डू ना ग ॥ क न ल य मा द ॥ व र्म ॥ क टि ना यी त न यी न रु य ॥ ग रु ल वा म लू ॥ व उ य द न रि य ति ॥
व र्म ॥ अ रि वा न ॥ ना ज रु य ॥ ग रु रु य ॥ म न ल रु य ॥ ज नू दित म य ति ॥ य न मा य व र्म ॥ म न ल ॥ यी म य च
मी ॥ वृद्ध कानू ॥ ग नै य न दिन ॥ अ र्द्ध ना ग म य ति ॥ ॥ म य न कण्डलमाह ॥ य व ता न क ॥ न दी क

[illegible]

अकनयिय॥हासिग॥उगखरुव॥आहानविना॥मत्तमांशुदत॥कठतिकमभूअमुयिय॥आउवातयिल्
॥गलुमाल॥वेसर्योणित्रभूने॥हनदाद्य॥कामनबीनाजरुय॥गरुरुय॥ब्रवानमल्ह॥अकानमल्हवर्ष॥क
दिनागहनकुदि॥वर्षेश्वेसर्थगन्धमाल॥वर्ष२॥याधिकदिनागयमाद॥वर्ष३॥अउचदनहिइति॥तीर्थ
गमतमल्ह॥वर्ष४॥वममदुरुय॥संयममल्हचाटनमल्ह॥वर्ष५॥हनदाद्यसंग्रामसनर्ण॥वर्ष६॥अतयदिन
मपति॥अनमोदवन॥मनर्ण॥अनु॥अप्र॥अमावास्या॥पूर्वहुडनर्ण॥मृयति॥ ८ ॥पूर्वहुडनी
९॥अनमोदवन॥अनमोदवन॥अनमोदवन॥अनमोदवन॥अनमोदवन॥अनमोदवन॥अनमोदवन॥अनमोदवन॥

कान्क ॥ दृष्टि संवद ॥ वानरा वद निड ॥ यक्ष मूखी ॥ नाज भवायूज क ॥ तनू वयस वद्विध तल गी ॥ किं चित्
दय कन ॥ गम विक्रम वा तिज ॥ कृष्ण कृष्ण ॥ भन वान् ॥ वृक्ष नी ॥ द्वियुक्ता भ ॥ माना भिक ॥ जूहि मानी ॥ स्वत्य सं उच्छ
॥ विच क्ते त ॥ विद्या रा गी ॥ भर्म नत ॥ दाता न ॥ स्ति न नाग ॥ स्ति न वचन ॥ स्ति न चिरु ॥ यद्वन यवा स गम न रू व वति ॥
दृष्ट ॥ स्ति न चिरु ॥ वन स्वरु व ॥ जूहा न सर्वने ३४ स्वता ॥ भुवा त यित ॥ नाग दत्त नाग ॥ उद न गूल ॥ बाधि
जुजी लु ॥ वन क रु कृष्ण ॥ कृष्ण गूल ॥ वन नाग ॥ जूका न मूख वर्म ॥ कृदि नाग दत्त न मूख या क ॥ वर्म ॥ सूर्य रुय
जुजि लु कृदि नाग ॥ बाधि यमा द ॥ वर्म ॥ गम ॥ भक्त यदा न ॥ वर्म ॥ भक्त ॥ भक्त द्या ट क नाजरु य ॥ वन य दिन म

[illegible]

[illegible][illegible]

॥ विष्णुसहस्रनाम ॥
 ॥ अथ श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥
 ॥ १ ॥

कसगल॥कुं कय्यादउरुनानि॥अंगनक्षयाद॥विष्णुनामि॥दक्षिणनिष्क्रमतगृह॥तिनसूताजात॥भीतवर्धु॥ज
थवानकावर्धु॥जनप्रिय॥प्रभावी॥प्रियदर्शन॥वनवन॥सौराग्र॥गजस्त्री॥कृष्णरागी॥वाचरावदन्दि॥गनूलव
येसबद्धित॥अक्षेपप्रिय॥मात्सल्या॥निखद्याभिरुवति॥शूलइ४स्वीत॥एष्वानू॥नसप्रिय॥विशारुगी॥वरुवान्म
न॥मृडक्यारुवति॥स्वल्पयूग॥यनहायनित॥नतिप्रिय॥वाञ्छायजीवित॥कृष्णकर्म्ममजिवित॥कुरुष्टदरु
गी॥द्विकृष्णल॥भवदानजयलारु॥महावृद्धि॥अहिमानी॥स्वजवाक्क॥द्विप्रक्राम॥मारुचित्त॥उच्चवादिन
॥दीर्घनामी॥माताधिक॥स्वल्पसन्दृष्ट॥अकम्पकलिप्रिय॥कुरुद्रानू॥गीतवाङ्मयि॥जतस्वहाव॥आहनम

॥ सोदन दधि दीन अमुधिय ॥ भ्रातृवातयिरु ॥ लम्भाकृदि गून् ॥ निना नाग ॥ कनदाद्य ॥ वेसल्यनिप
॥ यम नरु ॥ यलु नाग ॥ अकानमल्ययममास ॥ वेसल्यकृदि नाग ॥ वर्म कनकृदि नाग ॥ मवितनदरु ॥ वर्म
॥ महागाम ॥ गमृज्जलरुवति ॥ वर्म ॥ नदीयुवाहुरुयकृदि गूल ॥ वर्म ॥ विमदरुय ॥ योनगामुद्या
टक ॥ वर्म ॥ कनदाहकृदि नाग ॥ अतयदितमयति ॥ यनमायवर्म ॥ मजलं वेणु ॥ खरुय ॥ अरुमी ॥ गतद
यतदरु ॥ ननेधनदितमयति ॥ १४ ॥ अरुनाहकृदि नाग ॥ मणदवता ॥ वेधवलाधिदवता ॥ अल
म्यायलिगाम ॥ हं नवाहन ॥ मगसल्य ॥ दवगल ॥ मीतवर्तु ॥ जंगमकृदि सर्व ॥ दृष्टिक नागियनियुर्तु

॥ यधिमयतनवन् ॥ तनसताजात ॥ मभावी ॥ महायारु ॥ नित्यरु ॥ लामु रु ॥ धर्मिष्ठ ॥ विद्यान ॥ स
र्वजनधिय ॥ वरुक्र ॥ मधवय ॥ वर्द्धतजूर्ध ॥ दसितवचन ॥ यिताना ॥ सरुग ॥ इश्वरुगी ॥ यध्यासु
मिष्ट ॥ यध्याकसी ॥ विविक्तय ॥ वरुमिष्ट ॥ वरुवात्तव ॥ मिश्रावादी ॥ दीर्घवागी ॥ कोउहन ॥ कुरुकान
॥ इमीन ॥ मानाधिक ॥ यध्यानीनमिष्टय ॥ ननविह ॥ मायावृद्धि ॥ कियक्रा ॥ नित्यवाधित ॥ गीतवाद्यधिय ॥ वरु
कुरुगी ॥ आरुनमस्य ॥ मासादन ॥ सुनाधिय ॥ मृक्षानरुगी ॥ भ्रातृवातयिरु ॥ हृदयनीनगूल ॥ कननगना
॥ कदिगूल ॥ आसुतक ॥ अतनाग ॥ अकानमल्यरुतीयमास ॥ मखयाकृदि नाग ॥ वर्म ॥ वेणुयकृदि

वृत्रिदयरागी॥वइरागी॥स्वजनरागी॥सुखितारुवति॥निमूजजीवती॥अकृत्रयिय॥विआरागी॥यं
नकह॥वइय॥वइवान्तव॥सुीयदियनुससराव॥अलिनवचन॥सिचददव॥यियदभत॥मातायिता
उयवादि॥अतिथियुनयजक॥उतस्वरुव॥आदान॥भाउवातमित॥द्याधिकटि॥कासस्वास॥जुंजी
॥गिनधूल॥उतयाग॥अकानमृत्समास॥अतिसानदन॥वर्ष१॥कृदिनागहन॥वर्ष१॥कृदिनागया
भिकक॥वर्ष२॥मायराज॥संग्रामनमुद्याटकरुय॥वर्ष३॥कनसनिवाट॥वर्ष३०॥अतिसानदन॥वर्ष३०
नदीयराज॥जोनलनमुद्याटकरुय॥उतियदिनमृत्समिदयतति॥यनमायवर्ष३१॥मनर्ष॥आवाटमास

अकृत्स्या॥अष्टमतर्क॥गुक्रदिन॥अर्द्धनामयति॥ १८ ॥अष्टमननक॥गुरुलमास॥विश्वद
दता॥नृदाभिमदवता॥वृहस्यतिद्वययाद॥धनूनाभि॥मकननालियाक॥उलीनिकु॥वश्विमदायगृह॥मा
नृमांस॥गूलयुर्धुसत॥ग॥सत्य॥नकलु॥तनसताजात॥अनयिय॥वाक्यु॥गुलरु॥विदगसुखी॥अर्थ
माकयी॥अष्टवसायीयात्स॥अष्टकर्म॥कोउहन॥अर्थवक॥वालस्तान॥सतर्तयागी॥मधावी॥धामुवइ
म॥नजसवा॥कृषिकर्माकथायिय॥किर्गुरुमति॥उयवासणीन॥धर्मनील॥कम्मनत॥चीनचिरु॥अहीमानी
॥अतायिमाउयवादि॥अवाक्यवादी॥गीतवाइयीय॥गन्धमाल्ययिय॥नकृतिदा॥वइरायीनत॥वइयू

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीमद्भागवतस्य प्रथमोऽध्यायः ॥
 १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 २ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 ३ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 ४ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 ५ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 ६ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 ७ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 ८ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 ९ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥
 १० ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमं भूयः संयुज्ज्वलन् ॥

नमो नमः ॥ मधारी ॥ धीयदर्शन ॥ स्यामवर्ण ॥ कलिप्रिय ॥ विष्णु नमः ॥ घासादिक ॥ दर्शनीक ॥ बलवन्त ॥
 विष्णु रूपा ॥ यगल ॥ वानरुतवदनिद ॥ मधुवयसवर्द्धन ॥ विद्वत्सखी ॥ नाजसवक ॥ वानिस्त्रव इमिग ॥ सी
 रा रती ॥ यनरा यो नन ॥ कोडहन ॥ जनका नक्ष ॥ यवासणील ॥ सततंदव धर्मनत ॥ यक कर्म ॥ धर्मणील ॥
 दानधूल ॥ गीतवायप्रिय ॥ निजासवी ॥ निनाकूल ॥ क्रियकाध ॥ अहिमानि ॥ मानाधिक ॥ स्वत्यसंउरु ॥ आदा
 नवन इस्वी ॥ भाउवात यिरु ॥ नामयुत्सधूल ॥ गणुमाल्य नमः नाग ॥ कर्णधूल ॥ वतनाग ॥ निखयाधिनाः
 नमः ॥ सुममभद्रा नाजया नग ॥ आरुह ॥ विष्णु ॥ जनयूजक ॥ जनस्वरुव ॥ अकालमृत्युमास ॥ दलम

मास ॥ मास ॥ वे सर्व गणु मात्या ॥ दान अति सान नम ल् ॥ वर्ष १२ कृदि प्राग, दानाति सान ॥ वर्ष २० वीन
न गणु दार हयः स्त्री निमिलति गणु दारक ॥ वर्ष ३० नदि प्रदान लम ल् ॥ वर्ष १० दानाति सान, कृदि प्रा
ग, अतय दित मति ॥ यन माय वर्ष ८० मनर्ल, आमार मास, उगा मार न दान, नति न्वन दिन मयति ॥ २० ॥
वदन कोरु हल माद ॥ सकता नक ॥ स्वद वगा विष् ॥ वास वरु नयन ॥ वक्रा भिद वगा ॥ गि नति मूद्रक ॥ न
क स गन ॥ सिंह सख ॥ आर कासन ॥ मन वातिक ॥ गण ॥ नते न्वन कोरु, मकन ना नि माउ २ क म ना नि याः
द २ म न्वि मय वं म गृह दान ॥ अउ सुगा जात ॥ अम वलु ॥ वाक यउ ॥ भील न क ॥ सर्व जन विषय ॥ विषय

दर्शन ॥ श्री वन ॥ या सादिक ॥ हिल ववन ॥ दी द्ये दमी ॥ आदि ठिक ॥ अक न विषय ॥ निल्य रु ॥ दृ
विरु ॥ विशा वन ॥ हान वात ॥ धर्म वन ॥ गणु रु ॥ नित्य न ॥ नाज सवी ॥ कस क म ॥ दान हा वद निद ॥
अनू खि ॥ किय का म ॥ माना भिक ॥ म हा वद्वि ॥ म हा हा गी ॥ गणु हा गी ॥ सय हि न ॥ किय का म ॥ अहिः
नी ॥ दी द्ये ना गी ॥ कल क रु लि ॥ को उ द न ॥ वे व न ख व ॥ अला स ग म ल सी न ॥ वत ल हा व ॥ आ हा न
म हा, मा सा दान, दानि, म ध, मिक, क द, अम, सु, न विषय ॥ अउ वात कृदि गूल ॥ वा भिद न ॥ क दू मि
व न ॥ अका न म ल् मास २ म स व का क क दू ॥ वर्ष १२ कृदि गूल ॥ अति सान ॥ वर्ष ८ दाना भि, विरु द

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

१॥ अमी भेसदुसरा माहा वचना ॥ हित (धेव) सीस्यवका भनन ८१ पीत ह्म य नागीव, वेसं जायतन ॥ १
॥ वदी गीम व नायानि, गीतवा य विम ८४ माह्य पिल धिय (धेव) वेसं जायतन ॥ २ ॥ अमी कडा
सहा दधी ॥ चड नात्मा यदस्यत ४ मिश्र नयात हा कव, अमृता जायतन ॥ ३ ॥ वयला पीव सुधध, मभा
वि व धिया निग ८४ अगिला ही भना धुध, आभाठ जायतन ॥ ४ ॥ वेय हान य वा (धेव) आया चर्म य मिश्र
य ८४ भर्म हाय दि दाता ध, आव (मा) यतन ५ ॥ ५ ॥ अमृ ह्म गुरु (मा) लारी, दात आत य धिना ४ जा
जत यान ना नून, मासिरा डय दग ॥ ६ ॥ सुखा का क सुव दही, नाजय आभना भिक ८४ सख वा गुरु

सख द, आधिवा जायतन ॥ ७ ॥ काया दी का माहा आनि, दवयूझा भन न्व ८४ विविश प्रतिमा निर्य
का र्क जायतन ८ ॥ महा हानि महा हागी, भर्म हा जत वलरु ८४ दवयूझा माहा विद्या, न वा मा र्म नि
न ८४ ॥ ९ ॥ सुविदा माहा सख, माह पिल ध्या भक ८४ आत्मा हागी त आ हागी, यो धर्म जायतन ॥ १०
॥ महा य (मा) माहा हानि, काया वा ज भना गम ८४ वयला सू न हागी च, मासि मा र्म दय जायतन ॥ ११ ॥ कूली
न धयला दाता, दव द्वि जय यू जक ८४ श्री चय ना माहा सख, रुद्रु ल जायतन ॥ १२ ॥ ॥ इति माहा सख सख
॥ १३ ॥ अमी भि रल माहा ॥ कून र्म गी भने ही न ८, कूल र्म ता य का न क ८४ वस ना स क विरु ध, यानि

यत्किञ्चिज्जातम् ॥ १ ॥ यत्र दाना नाना तिलैः सख्यं सोचयितुं वर्जितं ४५ तत्कन ४५ सदा हीनं च विनीयासं रुच्यं
नन ॥ २ ॥ अत्र नाना गिरिकायाः त्रिदश ४५ नमः सदा ४५ यत्र दाना नाना तिलैः लगीया जायत नन ॥ ३ ॥ मन्त्राणां
यत्राणां च मित्रं सही विवर्जितं ४५ भन सक्तान संयुक्तं च उच्छ्राम भन जायत ॥ ४ ॥ यत्र दाना गुणं प्राप्तिः पितृणां
यत्राणां ४५ दाना होक्ता गन्यीनि ४५ यश्च सीतं रुचात न ॥ ५ ॥ नाना दाना हि गन्ती च सदा कन रुका न क ४५ तिलैः
ज ० यदा भीतं बह्वी जातारु वल न ॥ ६ ॥ जूल्य गाव गज सीतं सोहा य गुणं सुन्द न ४५ यत्र दानं भन
संयुक्तं ४५ सदा हीनं जायत न ४॥ ७ ॥ भस्मिह सख्यं वादी च दाना होक्ता च वल न ४५ गुणं रु ४५ सर्वं कार्यं

रु ५५ सीतं रु वल न ४ ॥ ८ ॥ दाना दाना भक ४५ यत्री भनी सी सप्तमान स ४५ नाना ह्या न नाना तिलैः नव
मांजो दिजायता ॥ ९ ॥ दाना दाना भन मन्त्रेण दानं सदी यया वक ४५ गुणी भनी व भविह्य व भवि ययता
नन ४ ॥ १० ॥ उकाद नाना नलुख्यं दाना गन्ती वीरु वत ४५ भस्मिह सख्यं विवर्जितं गुणं रु ४५ यका गुणि ॥ ११
॥ यत्र नम्य यत्र नम्य ४५ सदा हीनं ४५ रुच्यं ४५ दानं नन सी नम्य दानं जी जात कानन ॥ १२ ॥ सदा सिद्धा
मला दानं ४५ नाना ह्या सी जिह दिय ४५ यत्र कार्यं नाना तिलैः यथा दानं यदा रु वत ॥ १३ ॥ भनाना भः
मन्त्री नम्य ४५ न ४५ सदा कन रु क ४५ दाना दाना जा सखी च च उच्छ्राम यदा रु वत ॥ १४ ॥ यत्र यका मनि

सूक्तं महाहोत न लालस ४५ उद्धवय न दानं न नतथ यू लिमा रुवत् ॥ १९ ॥ स्तिना नम ४ यन
दमी वको मूर्धन्य नाक्रमी ४ युट सवी च स हान न्यमा वा स्या रुवत् न ४ ॥ १० ॥ प्रति ति थि रु ल स
माय ॥ ~~अथ न द व रु ल ता रु~~ सुनूय ४ यु रु ल ता रु द द ४ सु ने का य म दी भ नी ४ अ न्वि नी सं रु वा ला का ४
जाय न व ल रु ४ ॥ १ ॥ अ न गी स य वा मी च स य न न्व द द य त ४ रु न न्या जाय त ला का ४ स सु ख म गि मा न
॥ २ ॥ क य न या य क मी च इ भाल निर् लो पी ठि त ४ न क मी क नू त नि क र्कि का सं रु वा म न ॥ ३ ॥ भ नी रु
न म भ्रा वी न य मा न ४ वि य म न द ४ स ल वा दी सु न य न्य वा दि न्या जाय त न ४ ॥ ३ ॥ च य ल न्व उ नाः

भी उ ४ क न क मी स क मी च ४ अ न का नी य न द मी स ल रु व गि मा न व ४ ॥ ९ ॥ क त रु ग वि ति दी ना न
न या य न त ४ म ४ ४ अ न द न के रु सं रु ता भ न भ न्य वि व र्जि त ४ ॥ १० ॥ न न ४ सु र वी च रु गी च सु रु न्व ज
न व ल रु ४ य ग मि णा दि रु र्के का जाय त य यू न व स ॥ ११ ॥ द व भ मी भ ने र्के का वृ द्धि व न्ना वि व र्के का ४
यू र्म जाय ला के ४ न ना ला लु रु न ४ सु र वी ४ ॥ १२ ॥ स व र्के के रु गी न न्व क त द्वा व व क ४ ख ल ४ ४ अ न
या य न ना जा ता ४ क त क मी वि जाय त ॥ १३ ॥ व रु रु ल भ नी रु गी वि रु रु का म हा य मी ४ य मू ना ध ना
उ स वी म या या जाय त न ४ ॥ १४ ॥ क ल्या न य थ भ या य वि ती य व भ न के य ४ मा उ ४ यी ज रु गी या व वि

३४ सस्येव उर्थक ॥ ११ ॥ विद्यायाः भनसंयुक्ता, गंही न ४ युयदायिय ४५ पूर्व रूनुलीका जाता ४ सुखीयः
 लिगयुजित ४ ॥ १२ ॥ दान ४ भूनाम इर्वका, भनवदार्थयलिग ४ उरु नारुनुलिमात, महायाई भनयिय
 ॥ १३ ॥ असखववन दृष्टं ४, सुनायाव न्यवर्जित ४ रुकुजातान न (श्री) ना, जायतयान दलिक ४ ॥ १४ ॥ यश
 दाजयत रुकु, भनभायसमन्वित ४ दववा कृलरुकथ, विगयां नायगनन ४ ॥ १५ ॥ विदस्य भामिकेत्यार्थ ४,
 दवव नयियव सुरु ४ सुखीव दवव रुकाथ, स्वाती जाता रुवलिन ४ ॥ १६ ॥ अतिल द्यातिमानीय, निदू न ४ कनरु
 ४ ॥ १७ ॥ विदस्य नायानवा जाता, वन्यजननता रुवत् ॥ १८ ॥ यशस्वार्थ ४ यवासिव, वन्यकार्यसिदाशमी ४ अत

३५ सस्येव उर्थक ॥ १९ ॥ विद्यायाः भनसंयुक्ता, गंही न ४ युयदायिय ४५ पूर्व रूनुलीका जाता ४ सुखीयः

॥ २० ॥ दान ४ भूनाम इर्वका, भनवदार्थयलिग ४ उरु नारुनुलिमात, महायाई भनयिय
 ॥ २१ ॥ असखववन दृष्टं ४, सुनायाव न्यवर्जित ४ रुकुजातान न (श्री) ना, जायतयान दलिक ४ ॥ २२ ॥ यश
 दाजयत रुकु, भनभायसमन्वित ४ दववा कृलरुकथ, विगयां नायगनन ४ ॥ २३ ॥ विदस्य भामिकेत्यार्थ ४,
 दवव नयियव सुरु ४ सुखीव दवव रुकाथ, स्वाती जाता रुवलिन ४ ॥ २४ ॥ अतिल द्यातिमानीय, निदू न ४ कनरु
 ४ ॥ २५ ॥ विदस्य नायानवा जाता, वन्यजननता रुवत् ॥ २६ ॥ यशस्वार्थ ४ यवासिव, वन्यकार्यसिदाशमी ४ अत

तथीयावन्मूसा नो, हसवलेवल्लक ४१ जाताना धनछाया, सक ४१ तयतिरुवत् ॥ २९ ॥ कय (॥ ४१ ॥
 नयुल्लच यनदा गाय सविक ४१ जात ४१ तहिसायाच, विदभगमतिरुवत् ॥ २० ॥ वकासुस्वीयजायू
 का, व इतिजामिनर्थक ४१ पूर्वराडयदायीच, जागाहवतिमानवा ॥ २१ ॥ सोन ४१ ससताधर्म ४१, गण्डः
 धातययामन ४१ उरुनारुडयजाता, नन ४१ साहसिकारुवत् ॥ २२ ॥ सयुल्लुम ४१ युविदद ४१, साध ४१ गूयाः
 विचकल ४१ नवातीसहवालाक, मनमानवल्लक ॥ २३ ॥ नितक ४१ रुलसमाक ॥ ॥ जूथयागरु
 लसा ॥ विस्मक ४१ ममूला, दूय ४१ राग्यवाहवत् ४१ नानालंका ४१ संयुल्लुमहावृद्धिर्विसानद ४१ ॥ २४ ॥

धातयागसमलानी, याषितावल्लह ४१ तत् ४१ तल्लरु श्रदास्मादि, स्वा (॥ ४१ ॥ नित्यं कतायम ४१ ॥ २ ॥ जयू
 आनासयाग्य, जातामानाधतीक, वि ४१ दीद्योयू ४१ सत्यसंयना, वृद्धवाययनाजित ४१ ॥ ३ ॥ सोराग्यय
 समलानी, नाजमलीसजायगेन निपून ४१ त्वकार्ययू, वतिनानांचवल्लह ॥ ४ ॥ (॥ ४१ ॥ रुन (॥ ४१ ॥ रुनावाला, व
 इ ४१ क ४१ वान ४१ जूउन ४१ सर्वकार्ययू, सुद्धहोमीसदासूक ४१ ॥ ५ ॥ जूतिग (॥ ४१ ॥ वजाजाता, माहदका
 हवचस ४१ ग ४१ अर्क ४१ वजासुगे, कूलहनायकीहित ॥ ६ ॥ सकर्मनामया (॥ ४१ ॥ सकर्माजायतन ४१
 सर्वयीति ४१ सुगील ४१, नागीरागी (॥ ४१ ॥ विक ॥ ७ ॥ कतिमान् कतिआ (॥ ४१ ॥ कीलियू ४१ धनान्वित ४१ राग्य

मनु सिद्धि यव रुक ४५ दिव्य मालि सप्त गन्ध, सर्व सन्ध गारु व ॥ २१ ॥ साध्या तसिका सिद्धि, ध्वय (म) मस
 स्वागम ४५ दीर्घ सू ४५ सिद्धि च, जायते सर्व मङ्गल ॥ २२ ॥ गुरु गुरु गते यूको, धनवान् नयि जायते विष्णु
 नमः सुसन्धना, दाता वाक्मलयूजक ॥ २३ ॥ गुरु सर्व कला यूको, सर्वार्थ हान्ना रुवत् ५ कवि न्य
 नायि नू नन्ध, धनी सर्व जन प्रिय ४॥ २४ ॥ वक्र याग महा दातु, वदन्म सुय नायन ४५ वक्र हान नगा
 निर्णय, सर्व कार्य मूका विद ४॥ २५ ॥ विदुह य कल जगता, नो गारु वति विष्णु ४५ अल्लाय न्य सुखी
 हा गी, गुणवान् नयि जायते ॥ २६ ॥ वेदना जायमान सु, निरुत्साहो वरुकि ४॥ कूर्वा नायि जन ४५ धीति

व
 यया खी प्रियता न ४॥ २२ ॥ गिया गरुलं समाक ॥ ॐ ॥ अथ वानरुलमाह ॥ मिष्टान्तरा गीमानी
 व, काभिव नतिल ४५ विष्णु भिका न विवा न, धन कामि रुवे न ४॥ १ ॥ हा गी कामी न सुवला, गुणिमा
 तिजित दिव्य ४५ विद्या भिक ४५ न यूको, जायते साम वासन ॥ २ ॥ मूर्ख विद्या धनी कू ४५ प्रतिसृति वि
 नन्दक ४५ जूना सिवा वदहीता, होम या गीत नारुवत् ॥ ३ ॥ वदन्म सुक्रिया यूको, जायते वद रु प्रत ४
 ५ रुयान काया ग यूको, जायते वृध वासन ॥ ४ ॥ जूथे हा गी धनी मूल ४५ रुय नू व रु सवक ४५ देव ही यि
 प्रतिसृति, जन ४५ मुकदिन रुवत् ॥ ५ ॥ वद विष्णु गिहा गी व, यूय यो व धनान्वित ४५ यजान्वित यूधुचिता

गुणवानरुवर्जित ॥ ८ ॥ नीवासक ४ कृतघ्नश्च, कटिलावन्धुयिउक ४ कृतकार्यरुना नाभी, जायतमिति
 वासने ॥ १ ॥ नृतिवानरुलसमाय ॥ १० ॥ अथवा नाय ४ विषय ४ प्रथममास, द्वाविंशत्ययाद ४ १४ मरुयिच
 तत ४ सूर्य जाताजीवतिमरुयि ॥ १ ॥ एकादशममास, चतुर्थीजावभाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, चतुर्थका
 निमोमति ॥ २ ॥ वैश्वानर ४ द्वाविंशत्ययाद ४ १४ सयविंशतिवर्षव, चतुर्थीजावभाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, सदावागीसजीवति
 ॥ ३ ॥ वैश्वानर ४ समास, चतुर्थीजावर्षतथासम ४ १४ सयविंशतिवर्षव, ततामरुविविधति ॥ ४ ॥ गुर्वीच
 सयममास, भाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, ततामरुविविधति ॥ ५ ॥ गुर्वीच
 सयममास, भाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, ततामरुविविधति ॥ ६ ॥ गुर्वीच

हाजागविविधति ४ १४ सयविंशतिवर्षव, ततामरुविविधति ॥ ७ ॥ नृतिवानरुलसमाय ॥ १० ॥ अथवा नाय ४ विषय ४ प्रथममास, द्वाविंशत्ययाद ४ १४ मरुयिच
 तत ४ सूर्य जाताजीवतिमरुयि ॥ १ ॥ एकादशममास, चतुर्थीजावभाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, चतुर्थका
 निमोमति ॥ २ ॥ वैश्वानर ४ द्वाविंशत्ययाद ४ १४ सयविंशतिवर्षव, चतुर्थीजावभाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, सदावागीसजीवति
 ॥ ३ ॥ वैश्वानर ४ समास, चतुर्थीजावर्षतथासम ४ १४ सयविंशतिवर्षव, ततामरुविविधति ॥ ४ ॥ गुर्वीच
 सयममास, भाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, ततामरुविविधति ॥ ५ ॥ गुर्वीच
 सयममास, भाउ ४ १४ सयविंशतिवर्षव, ततामरुविविधति ॥ ६ ॥ गुर्वीच

च तजस्वीव इकार्ये कृत् नानाद भनसाहिरु वसना जायत नन ॥ २ ॥ वक्रावर्तनामिताका ४ ॥ इभाच
 ४ कामका नन ४ दीर्घ ४ स ॥ भनूडिमाग्य श्रीभजात ४ सदा मुचि ॥ ३ ॥ गुणवाननूययक म्च नाजयूझाजि
 तलिय ४ ॥ कृमनाभाउवादीव वमकालरुव नन ४ ॥ ४ ॥ वातिअकृमिहलि म्च भनभावासमृद्धिमान
 तजस्वीव इमान म्च भनजाता रुव नन ४ ॥ ५ ॥ वरुवीर्यानीतिता आसयूका सदा यमि ॥ इत्ययादग
 लाहीच ह मरुजायत नन ॥ ६ ॥ ॐ ति म उ रु लं समाक ॥ ॥ अर्थयक रु लमाह ॥ मूर्धुवलेतिरु ४
 धीमान् साअमिव इन्म मुवि ॥ १ ॥ कृमलाहानसय नन ४ ॥ अक्षयक रुव नन ४ ॥ १ ॥ निष्कनाइमूखाम्

स्व ४ ॥ श्रीद्वीवजनामि त ४ जायत वयनाय ४ ॥ इत्ययक्ता रुवानन ॥ २ ॥ ॐ ति य क रु लं समाक ॥
 ॥ नंदातिचिरुलं ॥ नन्दातिथेननाजाता महामा नीत्रकाविद ४ ॥ दवतारुकिमिद म्च इतिवप्रियवत्सल
 ॥ १ ॥ रुदातिथेव न्ममाया नाजसवीधनात्वि ४ ॥ संसानरुयरीत म्च यनमार्भमितिर्नन ४ ॥ २ ॥ जयावि (ओ
 नाजयूझा मूर्धयोणदिसंयुत ४ ॥ मूल ४ ॥ भन म्च दीर्घाय महाविरु म्च जायत ॥ ३ ॥ निकातिथेविरुहीन
 ४ ॥ यमादीउन्ननिचक ४ ॥ साकुरुमतहंकाव कामुक म्च ननारुवत् ॥ ४ ॥ मूर्धुमिति (ओ भनेमूर्धु वेद म्च मु
 र्धतत्ववित् ४ ॥ सत्यवादीपुद्गवगा यक्ता रुवतिमानव ४ ॥ ५ ॥ ॐ ति न यादि रु लं समाक ॥ ॥ कनक रु

माह॥ ववाद्यकनलजाता, मानिधर्मनत४ सदा॥ सुरुमजनकमाच, स्निहकर्मयजायत॥ १ ॥ वानवाखा
 ननाजात, स्त्रीधयवादि॥ गविक४ विद्यार्थसूर्यसंयन्ता, नाजमान्यथाजायत॥ २ ॥ कीनवाखउजात
 पुत्रीति४ सर्वजने४ सह४ संगतिमिष्टवर्त्तव, मानवस्ययजायत॥ ३ ॥ गीतिनकनलजात, ४ सौराग्यध
 नसंयत४ ४ मरु४ सर्वजने४ सार्द्धं विविगालिगृहानिच॥ ४ ॥ गनाख्याकृषिकर्माच, गृहकार्यजनायल
 यदमुवाङ्कितं तच्च, लक्ष्यविमहाद्यमे४ ॥ ५ ॥ वनिजकनलजाता, वानिजनेवजिवति॥ वाङ्कितं लहृत्
 लाका, दन्ताकनगामागमे४ ॥ ६ ॥ जूशुहालं रुणीलं च, यनघातनतसदा॥ कणसाविषकार्यम्, वि

दारुकाकनलहृत् ॥ ७ ॥ लकनकनलजात४, शौष्ठिकादिकयाकृति४ उषधदिषूदकश्च, हिमक
 दारुश्चजायत॥ ८ ॥ कनलचवउ४ याद, देवद्विजना४ सदा॥ गमकर्म॥ गायकात्राक, श्वउ४ यदविः
 कित्सक४ ॥ ९ ॥ नागचकनलजात४, स्मवल्लयीतिकानक४ कनूतदानूलाकर्म, इरु॥ गालालसचन
 ॥ १० ॥ किउद्यकनलजाता, सुरुकर्मनमानन४ उच्छ्रियुच्छ्रिवमागल्य, सिद्धिवलहृत्सदा॥ ११ ॥ न
 निकनलहृत्समाय॥ ॥ अथनागिरुलमाह॥ कामिनिद्वयानन्दा, दानाहीनाजलादयि४ च
 कर्मासु३ वाने, मयनागिरुवन्न४ ॥ १ ॥ हागीदाता सुविद्वद्वा, महागलोमहावल४ नागीविलासी

गजस्त्री, सुमिश्रं च द्रुवत ॥ २ ॥ मिष्टवाक्कादृष्टि लाम् दयालु मेधूनधिय ॥ गन्धर्ववित्क ० वागी की
लिहानी धनिगुलि ॥ ३ ॥ ऐनादीर्घेयदवली, मभादी च द्रुवत ॥ ४ ॥ समर्थानवादी च, जायगमि धून
तन ॥ ५ ॥ कार्यकारी धनी नूना, धर्मिष्ठा गुणवत्सु च भनिवा नागी मदावृद्धि ॥ ६ ॥ रुद्रा रुद्रा विलस ॥ ७ ॥
यवासनी ल ॥ ८ ॥ काशी ग, वना ३ ॥ ९ ॥ स्त्री सुमिश्रक ॥ १० ॥ अनासका गृहवक्, कर्कवा ॥ ११ ॥ रुद्रव नन ॥ १२ ॥
मायक सुयायक, मयमांसधिय ॥ १३ ॥ सदा, १ ॥ देभरुमन नीलम्, नीतहीत ॥ १४ ॥ सुमिश्रक ॥ १५ ॥ विनयी नी
द्युकायश्च, जननिजनवल्लरु ॥ १६ ॥ यस्नीयक टालाक, सिंहनामिहव नन ॥ १७ ॥ विलासी सुजना ह

दी, गुरुगाधर्मयुजित ॥ १८ ॥ दाता नर ॥ १९ ॥ कवी वृद्धा, वदमानेयलाय ॥ २० ॥ सर्वनाक धियानाथ, ग
न्धर्वयसनन ॥ २१ ॥ यवासनी ल ॥ २२ ॥ सु ३ ॥ २३ ॥ स्त्री, कन्या जागारुव नन ॥ २४ ॥ १० ॥ अस्मानना भला ३ ॥ २५ ॥ स्त्री, यदू
लायी कयानि ॥ २६ ॥ चल के न्धल लक्ष्मीका, ग्रहमश्चाति विक्रम ॥ २७ ॥ ११ ॥ वालि च दक्षदवार्ता, यूजकामि
वत्स ॥ २८ ॥ यवासिसूह दामिष्ठ, सुलो जागारुव नन ॥ २९ ॥ १२ ॥ वाचयवासी कुनात्मा, नूलयिङ्ग ललायने
॥ ३० ॥ नदाननता मानी, निष्पुन ॥ ३१ ॥ सुजतजन ॥ ३२ ॥ १३ ॥ साहस ॥ ३३ ॥ याफल लक्ष्मीका, जनन्यामयि ३ ॥ ३४ ॥ धूर्त
न ॥ ३५ ॥ तानीही, दृष्टिक जायतन ॥ ३६ ॥ १४ ॥ नूल ॥ ३७ ॥ सत्यभियायुका, ॥ ३८ ॥ सात्विका जनन नन ॥ ३९ ॥ निलयविज्ञान

सप्तना, भनाद्यादियरुजक ४॥ १५ ॥ सानीचविगसंयना, ललिताकनरागक ४॥ गजस्त्रीकूलदहध
 भनर्गग ४ कूलागक ४॥ १६ ॥ कूजनस्यवसे ४ स्त्रीणा, यलित ४ यानदादिक ४ गीतहीललीनीगुद्र
 ४ दूगद्यासारवत्सन ४॥ १७ ॥ भनीत्यागीसहृद्य, दयालवद्वान्भव ४ यनियनितसोख्य, सक
 नजायतनन ४॥ १८ ॥ दातानस ४ कृतहृद्य, गजवाजीभनभन ४ गुरुदृष्टि ४ सदासोम्या, मानविश्याक
 तादस ४॥ १९ ॥ यथाद्यु ४ भद्रहीन, भनीरुगीसगकिक ४ भालीनकृद्विनिहीत ४ कसूजागारुवा
 नन ४॥ २० ॥ गंहीनदा ४ १२ नयदवाकाननारुम ४ कायनाकयनाग्याति, गुणय ४ कूलधिय ॥

२१ ॥ नयसवीर्गद्यतामे शुभर्वकिललपुरु ४ मीननालोसमूत्यना, जायतवत्तन ४॥ २२ ॥ मखदीना
 दभमानी, नानावद्विभमन ४ १ कुन ४ कर्क ४ ति ४ सिंह, कन्यायविरुमायिता ॥ २३ ॥ उलीस्त्रीमलीवालोवा
 ययायाग्यातन ४ ४ मखनामकनेकू, चउ ४ ४ क्लिन्नभिर्जव ॥ २४ ॥ वृत्तिचंडनासिहलसमाय ॥ ॥ लन
 रुलमाह ॥ मखलमसमूत्यन, र्धंजामानीसुधीगुरु ४ काभिस्रजनरुकावे, विकसीयनवत्सन ॥ १ ॥ दभ
 लनरुवालाका, गुरुकि यियम्वद ४ गुलीकृतिभनीलद्व ४ गूल ४ सर्वजनधिय ॥ २ ॥ मिथुनादयतजा
 ता, मीतीस्वजनवत्सन ४ ४ रागीरुगीभनीकामी, दीर्घसूत्राविमर्दक ४॥ ३ ॥ सिंहल ४ यदयागागारु
 * कर्कलमसमूत्यना, रागीभर्मजनधीय ४ मिष्टानेयानरागीच, सोरागीस्वजनधिय ४॥ ४ ॥

गीतविमर्दक ४५ स्वर्णोदनाल्ययुग्मं च स्वात्माहिनं विक्रमः ५ ॥ कन्यालयरुवावाता, नाताश्च
 मुविभाजद ४५ सीराग्रगुणसन्त ४ सुन्दन ४ सुवतयिय ॥ ५ ॥ उलल (मदयाजाता, ४ सुधी ४ सत्कर्मजी
 वक ४ विद्वानसर्वकलाहिरु, भनाद्याऊनयुजित ४ ॥ ७ ॥ दधिकदयसंजात ४, (नीतिवान्तिइक्षुभी
 ४ विद्वान्ज्ञानसंयन्त्र, सुखेयीविग्रहीसुधी ४ ॥ ८ ॥ भनल (सादयजाता, नीतिवान् धर्मवात्सुधी ४ कल
 मश्रयदानश्च, धारु ४ सर्वस्ययापक ४ ॥ ९ ॥ मकनादयसंजाता, नीतिवर्मावद्भूयज ४ लई ४ स्वच्छास्लसा
 दीन, स्वकार्यसूक्ष्मगायम ४ ॥ कुरु लमदयजाता, चनविक्रान्तिसोदग ४ यनवादनतनिर्य, मइकायाम
 ॥ १० ॥

हासुरी ॥ ११ ॥ मीनलतरुवावाता, नतकाकृतयुजित ४ जूल्यकार्मोतिनक च, दीर्घकालविविध
 क ४ ॥ १२ ॥ वृत्तिल मरुलीसमाय ॥ ॥ उच्चग्रहदुलमाह ॥ महाभतीमहाग्रश्च, उच्चसुहास्वजनन
 ४ सुभवनामहाहागी, भनवैद्यश्चजायत ॥ १ ॥ उच्चहीतसयुग्मं च, गजस्त्री, गर्वितातन ॥ मभावी
 दृष्टवाक्कं च, वनाद्युश्चवृद्धवत् ॥ २ ॥ नाजयुश्च विख्याता, विद्वानार्यायुजन ॥ सर्वशुक्ल
 वेलासीच, हास्यगीतसंयुग ४ ॥ ३ ॥ उच्चसुहानयुग्मं च, चक्रवर्तीभतीरुवत् ॥ नाजलद्विवियागश्च
 नाइ ४ गतिसम ४ स्मृत ४ ॥ ४ ॥ वृत्तिउच्चग्रहदुलमाह ॥ ॥ अथमूलतिकादुलमाह ॥ धनीस

स्वीकार्यविह. त्रिकालकृदिवाकन. चंदधनीचराकाच. लोमभूनादयेखन॥ वृक्षिकागविहृन्धवि
तादीविजयीतन. गुनीअमयूनादीना. म० स्याभियति॥ सुधी॥ शुक्रिकागसंरुच. युक्तामहागिसरु
मत्तमचतनाधने॥ यूपु. महाभूज॥ कनचन॥ ॥ इतिमूलिकागहृलसमाक॥ ॥ अथ
हृल॥ स्वगृहहृलवोलाको. महाग्रभसदायमी. चंदधर्मनत॥ साधू. मनुस्वीनूयवातयि॥ स्वगृह
कजचंद. भयालाधनवानयि. वृक्षनाताकथाहिहृ. ॥ यलुताधनवानयि॥ धनीकायप्रतिहृन्ध.
मनेरसगृहगुनी. इति॥ इतिविलंशुक्र. गनोमाने॥ खवाजत. ॥ इतिस्वगृहहृलसमाक॥

सूर्यमिगृहस्थात॥ लभुहृ॥ इतिनसोदद॥ चंदननाराथयुक्ता. न्यउलधनवानयि॥ लोमभसु
यजीवीच. वृक्षनूयधनवानयि॥ गुनीमिगृहयुक्ता॥ सतांगलकर्मसंयुत॥ शुक्रमिगृहलाको. ध
धतिवृक्षजतयिय॥ मनोयलानराजीच. ककर्मतिनताहृवत्॥ ॥ इतिमिगृहहृलसमाक॥ ॥ न
सूर्यहृवयुक्ता. वानधवेधिजितात॥ चंदनागीस्यल्ययुक्ता. इहृगयिचजायत. ॥ धनीचलोम
वन्नीच. ॥ कृत्सीत॥ यमनाउन॥ वृक्षइजावन्धवेना. गुनादिनामनान्वित॥ शुक्रनीचनसदाज॥
स्यगृह॥ नीलवर्जिन॥ भर्तेका. लभयनिदिध. गतावागतिगदित॥ ॥ इतिनीचगृहहृलसमाक॥

॥ ॥ सूर्यनियुगुहनिष्ठा, विषये ४ यीति तानन ४ वंदददयनागीव, होमतजाजअधन, ४ व
धनियुगुहमुखी, वाद्यता ३ ४ स्वयीति ४ जीववजायतकीवा, नाकद्विवकुक्तिग ४ ॥ शुक्रम
गुहमल्य ४, कवुद्धि ३ ४ स्वीतानन ४ ॥ नैशाधार्थि ४ ॥ कत, संगकमलिनारुवत् ॥ ॥ तिनियुगुह
लीसमाफ ॥ ॥ सूर्यसूर्यराव रुतमाह ॥ लग्नसूर्यजुतिवन्ध, चंचलान्मात्मगाउल ४ नउनागे
यीतिगाजा, जायतवानूलकृति ॥ १ ॥ सूर्यधनविवादिव, वरुण ४ ॥ यनिक ४ ॥ यवायवादीस
द्यन्व, कृतघ्न ४ ॥ रुवेत्तन ४ ॥ २ ॥ तीयस्कृदिवा नाथ, यसिद्धी नागवर्जित ४ ॥ रुयति ४ ॥ सुभील

४ ॥ दयालु ४ ॥ रुवेत्तन ४ ॥ ३ ॥ सूर्यचतुर्थ इवाह, ४ ॥ कृष्ण ४ ॥ सुखवर्जित ४ ॥ अयरावाति ४ ॥ नन्ध, ३
४ ॥ सुगीरुवेत्तन ४ ॥ ४ ॥ यक्षम इकेकाययुक्त ४ ॥ कनूयभीलवर्जित ४ ॥ कृष्णलङ्घयि ४ ॥ गतमान ४
जायत ॥ ५ ॥ सूर्यगता निन्ध, ४ ॥ गतमान ४ ॥ सुधी ४ ॥ सुखी ४ ॥ सुजाननागीरुयाव, संमत ४ ॥ रुवेत्तन
४ ॥ ६ ॥ सकर्म केकूदानन्ध, ३ ॥ यीताल्ययुक्त ४ ॥ शुक्रनागीसमायन्ध, जातकाहियजायत ॥ ७ ॥ अ
सकृदिवा नाथ, कृतघ्नादिनमानस ४ ॥ नन्द ४ ॥ दध्यागामि, वन्धूदीनन्धजायत ४ ॥ ८ ॥ नवम ४
नवीजात ४ ॥ कृष्णमूर्तिरागवर्जित ४ ॥ विजाविवेकहीनन्ध, कृष्णनन्धयजायत ॥ ९ ॥ दशम ४ ॥ वन्धूदी

न ४. क कर्माणी लवर्जित ४५ स्त्रीयं वना दीनता दीनार्थं न श्रज्जायत ॥ १० ॥ लारु सूर्य सूर्य ना ना
 नालारु समन्वित ४ सात्विका भामिक रूति नूय वातयि जायत ॥ ११ ॥ यय सूर्य न नागी सय दीन दृथ
 गति ४ अस्तु यी यूर दाना रुकि दी त श्रजायत ॥ १२ ॥ ~~॥ अथर्व वरु ल माह ॥ ल (म व लु ग~~
 ३४ कृद्वि ४ य स द्वा भ त मू जित ४ स्त्री व ल रु भामिक श्र द्वा द्य श्र त ना रु वत् ॥ १ ॥ भ त र्व ड भ ने ४ यूर
 लु नू य य अ गु ल वि त ४ न्ना स्तु न ना गी सी हा गी अ न यी य श्र जायत ॥ २ ॥ रू ती य श्र नि ग्ना ना
 थ यूर दाना समन्वित ४ भ त र्वि या दि स्थि ता ४ क र्वा भि क क मिक श्र ॥ ३ ॥ य उ र्ध्व नि ग्ना ना थ
 र्व न मूर्या वि जायत

यूर दाना समन्वित ४ भ नी सूर्य य न स्त्री च विज्ञा वात यि जायत ॥ ४ ॥ स त र्व ड स ता द्य श्र ना गी का
 मि स दारु यी ४ रु गि मे ४ यो नू धे यू का वि न यी व रु व ल त न ॥ ५ ॥ य र्व ड वि रु दी ना म इ का र्थो ति ला
 ल स ४ म न्दा नि ती क दृ ष्टी श्र नू जा यि म नू जा रु वत् ॥ ६ ॥ र्व ड यि स क म जा ता ३४ र्वी क छि व र्वे
 क ४ क य ना व इ वे नी च जा यत या न दानि क ॥ ७ ॥ अ र्व म ता न काना थ दी ना ल्या यूर स क र्व क ४ य
 ग लु श्र द्वा न्ना य य वृ द्धि रु व त न ॥ ८ ॥ भ म व ल्द ना नू कानि ४ स्र भ म ति न त ४ स द्वा र्वी त ना ग ४ स
 ती न्ना य ४ या या दी न श्र जायत ॥ ९ ॥ क र्मा स्तु न स्र भान्ना व इ रु ग्या म रु भ नी ४ म न स्त्री च म ना रु श्र ना

जमान्यश्च जायत ॥ १० ॥ लारुचंड लारुयक ४ यगल्लविगागायत ४५ सुमार्जगामी नर्जाल ४ प्रतायीरुग्यवानरुव
 न ॥ ११ ॥ अयत्र लयाय वृद्धि, वरुकीयनाजित ४५ कलाधर्मो सद्ययीच, विजात्री जातकारुवत ॥ १२ ॥
 ॥ अथरुमस्यवरुलमारु ॥ रौमल (मकनूयश्च, नागीवन्धुविवर्जित ४५ जूसल्यवादीतिर्देया, जायत
 यानदायिक ॥ १३ ॥ धनकूजधनेदीन, क्रियादीनश्च कूकु ४५ दीर्घसूत्रासल्यवादी, यूरवातयिजायत
 ॥ १४ ॥ एतीयसूकूजजात ४५ यतायि नानसंयुत ४५ नल्लनूना नाजसाथा, रुविस्वातश्च जायत ॥ १५ ॥ चउ
 र्थहसूतकूकु ४५ यिलाभिश्चा विनिर्जित ४५ वृथातटनीदीनयूर, महाकामिच जायत ॥ १६ ॥ यचमचधना

यूर, कूसंगामिसदानूज ४५ वन्धुवर्जविर्नकश्च, तनादीनायिजायत ॥ १७ ॥ मरुहोमनरुदीना, नानार्थे ४५
 नियुनिग ४५ श्रीलालस ४५ यूरुदव ४५ गुरुविरुश्च जायत ॥ १८ ॥ सकमरुमियूरुच, नूभूनालातिकाववान् ५ नीच
 सवीर्यचकश्च, निगुल्लयिरुवत्तन ॥ १९ ॥ अष्टमर्मगलकूकी, लल्लायु ४५ मसुयीजीग ४५ जल्यडय ४५ स
 नगश्च, निगुल्लयिरुवत्तन ॥ २० ॥ धर्मसूधनलीयूर, कधर्मोगतयो नूय ४५ नीवानूनागीकूचश्च, स
 कट्यय जायत ॥ २१ ॥ कर्मस्त्वानमदीयूर, गुरुकस्तो गुरुनिग ४५ सुयूगीच सुखी नूना, गव्विष्ठयिरुव
 न्नन ॥ २२ ॥ लारुहोमहमिलारु, नानायानावरुकीक ४५ नीमसीनयमान्यश्च, दवद्विजजगारुव ७ ॥

११ ॥ असद्ययी ययरोम, नास्तिकानिष्ट ४१ ॥ ०४१ वरुवेनी विद (भव, सदा गच्छति मानव ४॥ १२ ॥

॥ अथ वृद्धाव रुतं माह ॥ ल (मवृ (भच गी त स्त, नि ४ या या रु य यू जि त ४१ नू य हान य (यू क ४ यु ग
ल्ल मान या रु वत् ॥ १ ॥ चंद यू ध न स्ताने, धन भान्या दियू नि त ४१ गुरु कर्मा सुखी निर्यी, ना जय र्ध न्ध
जायत ॥ २ ॥ हृ ती य व वृ (ध ना ग ४, यु ग स्त व न्धू मा नि त ४१ धर्म ध जी य न स्वी व, गु न्द वा च्च का रु वत्
॥ ३ ॥ च उ (ध व लू यू च, व रु रु ना य (भान्ति ४१ य द वा का रा ग्य यू का, स ल वा दी च जायत ॥ ४ ॥ य
व म ना दि ली यू, यू य गी स म चि त ४१ सु वृ धि ४ नि धि स न्य त ४, सु खी रु व ति मा न व ॥ ५ ॥ म र्ध वृ (ध न्ध

न स न्य, वि ना धी स र्व व न्धू य, १०० यो धि क ४ का म य ना, वि द्वा न वि रु व त न ४१ ॥ ६ ॥ स क म च लू यू च,
नू य वि द्या धि का न न ४१ सु नी ल ४ का म ग्ग रु रु, ना नी मा न च जायत ॥ ७ ॥ वृ (ध र्म म र्द न द्य न्ध, कू दृ धि
४ या न दा वि क ४१ का मा उ ना स ल वा दी, ना ग यू का रु व त न ४१ ॥ ८ ॥ धर्म वृ (ध धार्मिक न्ध, कू या ना मा दि
का न क ४१ स ल वा दी च दान न्ध, जायत वि रु व त न ४१ ॥ ९ ॥ द ग म च वृ (ध ना ग, धन भान्य य (भान्ति
त ४१ व रु रु ना य न्ध वि न यी, का न्ति यू क न्ध मा न व ॥ १० ॥ ला हा सो स्य नि ल ला ही, नी ना ग न्ध स दा सु खी
व ज ता न्ना ग वि रु न्ध, की लि मा न वि जाय त ॥ ११ ॥ वृ (ध वृ य ययी ला का, ना गी व न्धू स म चि त ४१ या

यनक ४ यनाभीत ४ यनयकी चजायत ॥ १२ ॥ ~~अथ गुणवर्णनं~~ ल (मगुनीसूनीन अथ
 गल्मीधनवातयि १ न्याहीरु अनीनागी, ह्यातिसेख अजायत ॥ १ ॥ धनजीवधनीलाक ४ कनस्रवः
 न्मसंयुत ४ गवा अमहीमीयूक, कानिमानयिजायत ॥ २ ॥ जीवरुगीयतजखी, कर्मदकाजितलिय
 ४ मिशक ४ सुखसंयन्, तीर्थवालीयिआरुत ॥ ३ ॥ सुखजीवसुखीलाक ४ सुखगनाजयूजित ४
 ४ विजितावि ४ कलाधका, गुनरुक अजायत ॥ ४ ॥ सुगजीवसुतेयूकी, भामिक ४ यलित ४ सुखी ४ शु
 द्रवतादयायूकी, वितयीचरुवतन ॥ ५ ॥ मधुगुनीविद्ययूकी, वरुणरु अतिधून ४ उदगीमति

हीन अ, कामकीजायतजत ४ ॥ ३ ॥ सकसचसुनाचार्य, कामचिलामहाकल ४ धनीदाताय गल्म
 ॥ विष्कसोचजायत ॥ १ ॥ जीवरुमसदानागी, हयल ४ कसंयुत ४ वरुवेनीक कर्मावि, कूनय
 अरुवतन ४ ॥ ८ ॥ धर्मजीवधर्मकला, साधुसंगीच ॥ सुविद ४ तिनीहलीर्थसवीच, वरुणरु अथ
 जायत ॥ २ ॥ कर्मल्लितसुनाचार्य, यूलकीलिस्त्रवानित ४ नाजउल्य ४ सुनूय अ, गयालजायततन ॥
 १० ॥ लारुगुनीविवकीच, हल्य अदिधनेयुत ४ अलानूय ४ सुनूय अ, गुलवानयिजायत ॥ ११ ॥ यः
 यदहस्यतोनागी, असनीयनधर्मकन ४ वरुवेनीचसवी, गुनदमीचजायत ॥ १२ ॥ ~~अथ गुणवर्णनं~~

हाव रुत माह ॥ ल (म) शुक्र सुमील श्व, विरुवानतिसुन्दर ४१ सुविद्वान्मता रु श्व, धार्मिक श्वरुव
 तन ४२ ॥ १ ॥ भन शुक्र भने विद्वान्, वन्मसाथान् यार्विन, यसखीयनुरुक श्व, कतरे श्वरुवतन ॥ २
 ॥ हतीयहार्नवजागी, भनदाजसगाधिक ४३ तिनागी नाजमातीव, यतायीवयजायत ॥ ३ ॥ शुख
 कसखीविह, वरुहार्थिभनाधिक ४४ यमाभिगाजसखीव, विवकीचरुवतन ४॥ ४ ॥ शुक्रसुगसद्विः
 य, सुनूय श्वसद्वनत ४५ यगीयुगगीयक ४, सुखगायिरुवतन ॥ ५ ॥ शुक्रनियुसद्विः, सुनूय श्वस
 यावित ४६ ३ ४ सीगीकजरुयोने, विद्वधीचसदानन ॥ ६ ॥ सकसरुयुयुच, भनीदिद्वामनायुत ४७ नी

नानसवसनाना, वरुहार्थिभनायत ॥ ७ ॥ शुक्रसुखदेवयुम्, रुजागकनदयिय ४८ वथा गमि
 नार्थिभना, जना, विद्वारुवत ॥ ८ ॥ भर्म शुक्र भर्मयु, हानद्वि ४९ सुखीधनी ५ तनदमान्या
 वितनीनना, जनेरुवत ॥ ९ ॥ कर्मस्तिगरुयुयु, सुकमोतिभिजतवान् ५ नाजसवीधार्मिकश्च
 जाय ॥ १० ॥ लरु शुक्रसदालाहा, यस ४९ सेगुणावित ४६ धनीरागीक्रियासदा, जायतः
 मानवाकृत ॥ ११ ॥ ययशुकयययु, युनमिरुविनाभवान् ५ मिस्ववादीवन्धुवर्ज, गुणहीन्यावि
 जायत ॥ १२ ॥ ॥ शुक्रसुखदेवयुम्, ल (म) गतिसदानागी, कूनूय ४८ यनानन ४८ कमी

ल०यायवृद्धिश्च ॥ १० ॥ अरुवनिधुर्व ॥ १ ॥ धनमन्दाधनेहीना वातघिरुककुरुल० ददार्द्र० सुनिः
नागश्च गुली० स्वल्पायिजायग ॥ २ ॥ द्वायात्मजलृतीयकृ यमनागुलवत्सन० मरुमदीनवेमाया
धतीमूलम्वजायग ॥ ३ ॥ सुखमन्दसोरयाहीना दृगा (धैवा) नवेनन० गुण० स्रुवाव० सदि कृज
नेयादृत० म० ॥ ४ ॥ यूरुमल्लुयूरुहीन० क्रियाकीर्तिविवर्जित० हीनम्वकाविनूयश्च मानवारु
वनिधुर्व ॥ ५ ॥ मरुस्त्रातहितमन्द मरुहीनामहाधनी ययुयूरुय (मयूका) तीनीगीजायगन
न० ॥ ६ ॥ कलकृमिगुयूरु ककनशा नृजातिग० वूरु मरु द्विवर्तुश्च कृमश्चमजिनालुवत् ॥

॥ ७ ॥ मरुना कृममन्द दनिजव रू नागवात् मिथ्या विवादकल्लय यूनूयायिरुवत्तन ॥ ८ ॥ धर्म
मन्दन हीना निर्विकीरियायस० नृमं गाजायगलाक० यनदाननसदा ॥ ९ ॥ कर्मकृलसूर्ययूरु
ककल्लनवर्जित० दयासल्लगुलीहीनः चंचलायिरुवत्तन ॥ १० ॥ द्वायात्मजचलारुक्त सर्व
विद्याविनाशद० मगाकृमहिषे० यूरु नाजमायसुचिरुवत् ॥ ११ ॥ असयमीययमन्द कृगद्वावि
रुवर्जित० ययुवैन० कवमश्च चकृलाघितन० सदा ॥ १२ ॥ वृत्तिभानिरावलै हेसमाफ ॥
अथद्विप्रहलसार ॥ सूर्य ॥ श्रीवस्य ॥ जकमल ॥ चकवृद्धि ॥ चंचलविरु ॥ नत्मादिविक्रयमील ॥ कर्म

॥ सुखं ॥ इति नीला ॥ अतिरुह ॥ जज्वलाभिका न दान नील ॥ मिथ्या वादी ॥ कृत्ता कर्म नग ॥ हंकुति ॥ जूय
॥ सुखं ॥ यन सवक ॥ अक्षवार्थ ॥ स इव चत ॥ धनवान् ॥ कालिवा न र सीमा सी जव वरु य न वन ॥ न जे
॥ जूयवान् ॥ सुख ॥ यून्यवान् ॥ नाजमस्मी ॥ धनी ॥ मिश्र निमिरुख धन नायिक कर्म कला ॥ नाजय नाहि न ॥
मुयाथक ॥ सुख ॥ वायल रु ॥ यहुव ॥ भूमु अमुह ॥ समर्थी ॥ च अल च ह ॥ राह क तिष्ठ ॥ यद्ध क मल ॥
सीकय ॥ व युवान् वीयिकार्थ ॥ सुख ॥ वैद्य ना मुह ॥ धर्मवृद्धि ॥ स्वधर्मानुवर्ति ॥ राय्य यु विद्याग ॥ निर्मल ज
नाय ॥ अनादन रु ॥ ॥ यं ॥ सीमा सा ॥ वाह प्रमि ॥ दृगयूक दह ॥ मनय हा लु कर्त्त ॥ चर्म कर्म रु

॥ सुखं ॥ इति नीला ॥ कालिवा न रु ॥ चव ॥ काय रु ॥ वाक न ल ना मुह ॥ अर्थवान् ॥ प्रसदा धिय ॥ हास्य
॥ सुखं ॥ यन सवक ॥ अक्षवार्थ ॥ स इव चत ॥ धनवान् ॥ कालिवा न र सीमा सी जव वरु य न वन ॥ न जे
॥ जूयवान् ॥ सुख ॥ यून्यवान् ॥ नाजमस्मी ॥ धनी ॥ मिश्र निमिरुख धन नायिक कर्म कला ॥ नाजय नाहि न ॥
मुयाथक ॥ सुख ॥ वायल रु ॥ यहुव ॥ भूमु अमुह ॥ समर्थी ॥ च अल च ह ॥ राह क तिष्ठ ॥ यद्ध क मल ॥
सीकय ॥ व युवान् वीयिकार्थ ॥ सुख ॥ वैद्य ना मुह ॥ धर्मवृद्धि ॥ स्वधर्मानुवर्ति ॥ राय्य यु विद्याग ॥ निर्मल ज
नाय ॥ अनादन रु ॥ ॥ यं ॥ सीमा सा ॥ वाह प्रमि ॥ दृगयूक दह ॥ मनय हा लु कर्त्त ॥ चर्म कर्म रु

नयन॥सहस्रमुख॥आतिभक्तवर्त्ता॥यनदानजग॥नयनकाव॥मिथ्यावादी॥कयनवृद्धि॥यनगुरुवा
सी॥अंग॥नखयनिद्रक॥वश्यगी॥तमनायतिगिविद्या॥यस्यववादी॥वीनवृद्धि॥मायवृद्धि॥विषक
सुगतवेद्य॥कनरुधिय॥ ॥~~वृद्धि~~ ॥~~नयनवृद्धि~~ ॥संगीतमदजादिकला॥हि॥हि॥नवृद्धि॥रागी॥वृद्धि॥
वरुमनी॥अतिभक्तवर्त्ता॥वरुविश्व॥वदभासु॥वाद्यद॥नीतीवला॥स्मितरागी॥चन्दनयुष्मधिय
॥वृद्धि॥अतिभक्तवर्त्ता॥वरुविश्व॥वदभासु॥वाद्यद॥नीतीवला॥स्मितरागी॥चन्दनयुष्मधिय
॥वृद्धि॥अतिभक्तवर्त्ता॥वरुविश्व॥वदभासु॥वाद्यद॥नीतीवला॥स्मितरागी॥चन्दनयुष्मधिय
॥वृद्धि॥अतिभक्तवर्त्ता॥वरुविश्व॥वदभासु॥वाद्यद॥नीतीवला॥स्मितरागी॥चन्दनयुष्मधिय

नाद्य॥दृष्ट॥वीन॥भनवान्॥स्नानेयन॥कीलिवान्॥गलप्रवृत्त॥कलमुख॥वरुग्रामभव॥अंग
काकलीलि॥विद्वन्मनसु॥वास्यादा॥चनलक्ष्म॥यद्युधानक॥ ॥~~वृद्धि~~ ॥~~नयनवृद्धि~~ ॥~~नयनवृद्धि~~ ॥
द॥सुर्वर्ज॥यायकर्मधिय॥निमुय॥आचार्यकर्म॥नयनविनाभनक्षम॥यायालयतितादिवाचनलील
॥सुर्वर्ज॥सुर्विनीक्षण॥सर्वकर्मकर्मलवृद्धि॥नानाग्रहमल्ल॥सर्वनसराधिय॥दानाग्रहजधिय॥
नाजयधनि॥मनीषी॥सुर्वर्ज॥वकवृद्धि॥अत्यन्तकूटीन॥कयटी॥संवायकान॥नानादभक्तमलीनी
न॥अतिभक्तवृद्धि॥अत्यन्तकूटीन॥सुर्वर्ज॥सादायोनवृद्धि॥यनरायधिय॥नयनजीवि॥सुर्वर्ज॥या

सुवादिगीला॥जउवनयूनम॥यनायवावका॥सुल्यभनी॥सुअं॥उसिद्ध॥वाइयुद्ध॥रुषी॥नि
दया॥धननहीन॥यूनहीन॥सुविद्यागी॥सुअं॥वाउर्यववनरुषी॥धनी॥नाजमसु॥अथवासनाय
ति॥सुनयवका॥अथप्र॥सुअं॥अतिवश्वरु॥उरुम॥प्रागज॥सुनयनदह॥अयनाव॥अतिसुद्धि
सुन॥सुअं॥अंगहीन॥अर्थहीन॥सदाद्याभियुक्तदह॥विद्यादयन॥मिगविहीन॥महाजउवुद्धि॥सु
वृद्ध॥नजवद॥महाभनाय॥प्रकृषिय॥नित्यरु॥कविनवितयकुरु॥वितकन॥लियिरु॥सुवृद्ध
सुन॥उत॥यथागकि॥याता॥नाता॥वाक्यगुरुति॥धिरुमाए॥अनादन॥अथनसुकासक॥सुवृद्ध

॥नयसकसताव॥नेनसुहाव॥नरुविजय॥सुमागजनेविनाकत॥सुवृद्ध॥मिगहीन॥दीनकर्म॥म
उत॥दावे॥कुरु॥जमरु॥सदायनसवाटर्कि॥सुवृद्ध॥अयासुकार्यकर्त्ता॥मानी॥हानविनाधी॥उ
रुमर्य॥सुसुवानु॥सुमिगवानु॥अतिवाजवल्लरु॥विनीत॥सुसुन॥अथनवेनरुयतमु॥सायही
न॥यूनहीन॥क्रियानरुहिरु॥अभमावान॥नित्यनागी॥**॥यजुर्वेद॥यामयुवि॥अभर्मकर्मनग॥मि**
गहीन॥हानियनिरुका॥कृषिकर्मजिवि॥यजुर्वेद॥कमाकितभनीन॥सुहिरुलायी॥गल्लन॥म
नाहनदह॥वनितावल्लरु॥अगिकाभी॥संजुसु॥इरुगमागिक॥इरुगसुहिरुला॥गमनयिय॥लीता

रु॥ यं जूं न॥ जागमगमा रुक॥ नं धा न्वमी॥ कूटिनवूहि॥ लाकवेन॥ - **॥ वंदु॥** अगिसद झः
॥ निवूजदरु॥ वाकृद॥ वलवान्॥ वसिद्ध॥ अगियनखी॥ वइमिग॥ अगनूजवइयूरी॥ यं जूं न॥ स
वैनामुहु॥ अममावान॥ अगिद्वमी॥ यनघनाहिलामी॥ यं वूज॥ यूपहिना॥ अगहीन॥ वाकृद॥ वायस
॥ सर्वजनमाव॥ हसियमि॥ वंदु॥ यतिवतायू॥ यतिग॥ नानामिल्यरु॥ विसुनरध्याता॥ सखम
॥ सुतन॥ न॥ वंदु॥ विज्ञान॥ वृद्धिगील॥ नितिरु॥ ऊनाजीर्नुन्दीयिय॥ तिद्याभीमनीन॥ ल
कीमाद॥ न॥ यान्॥ वाकृद॥ यं जूं न॥ लिलिलखक॥ व्याख्यानकला॥ नाजयूनाहितवैमजागा॥

सुदृष्टि॥ गजघातिवद॥ लजात॥ - **॥ वंदु॥** सलसकाद्यकला॥ वृथीयति॥ उलमसीरुहा॥ यः
जावकाबी॥ नीतिरु॥ गी॥ वायरु॥ जूं वू॥ हीनकूलजातिजन॥ अरुहीन॥ अगिव॥ यगल
॥ अगिव॥ स॥ न॥ जूं न॥ सदाकर्मवत॥ सद्याधियदू॥ यनदभवासी॥ मूरवद्याधियूक॥ की
माहायसील॥ जूं वू॥ नाजवलरु॥ सयूउयूक॥ सर्वदाम्नीवन्द्यायमूरहागी॥ सर्वलाकयिया॥
जूं न॥ नाजवलरु॥ इव्वलभनीन॥ अममावान॥ मिगदाही॥ निर्दय॥ जूं न॥ दसनीसीगईजा
गा॥ इ॥ नीलासीरुहा॥ अगिइ॥ रवी॥ सदायनदभगसनाभक॥ - **॥ वंदु॥** वेनीतिरुहा॥ नाजरु

न॥ अतिरुद्रयूक॥ रुमलया कति॥ कक नदृष्टि॥ सूर्यवृक्ष॥ सदाय नक्षी कामुक॥ गुरु नयकृति
॥ कक नदृष्टि॥ कस्य हाव॥ अजाता॥ सूर्यवृक्ष॥ यदृष्ट॥ यादव॥ ना नीव सूरु॥ अथमकर्म नग॥ काय
कली॥ लोकमूला॥ नाजमली॥ अथवास नायूती॥ सूर्यवृक्ष॥ सुन्द नसवीन॥ लोकमाया॥ विरुभिष
॥ नाजमली॥ मिदयन॥ तीति न॥ मुरु॥ सूर्यवृक्ष॥ उन्मादयूक॥ यरायभान॥ सर्वसयन॥ मिश्रुति
यू॥ नाजमली॥ सूर्यवृक्ष॥ अंगहीत॥ अथमसुहाव॥ असमवश॥ सर्वलोकवेन॥ स्वर्गायवेन॥ स
र्व॥ नाजमली॥ सूर्यवृक्ष॥ अतिरुद्रयूक॥ अतिरुद्रयूक॥ सर्वसयन॥ दाता॥ विरु नवृद्धि॥ उरुमावान॥ सूर्य
वृक्ष॥ नाजमली॥ अरुका नी॥ कक नयिय॥ वरुहाए॥ उद्यागहीत॥ सूर्यवृक्ष॥ अतिरुद्रयूक॥

सुगाम॥ सुन्द नननस॥ विजाता॥ सुखहा नी॥ सुखवादी॥ रम्येवावा नयूक॥ रम्येयूक॥ मिश्रुषिय॥ सूर्य
वृक्ष॥ नाजमली॥ कायकली॥ अजाता॥ निली सन॥ अथवा अथमऊतस्वामि॥ नाजकूलजन्ता॥ अथवा
न॥ नाजमली॥ वंजूरुष्ट॥ यतिता॥ अथवा नाता॥ नाजमलीवा॥ अथवा॥ अथवा नाययह॥ वंजूरुष्ट॥ अ
तिरुद्रयूक॥ अतिरुद्रयूक॥ यायवृद्धि॥ यथाहली॥ सुन्द नदृष्ट॥ राहवेन॥ रागनरुति॥ वंजूरुष्ट
न॥ वीन॥ अतुजाता॥ अतुवृद्धि॥ अथमकूलजाग॥ वरुसूरुष्ट॥ वरुसूरुष्ट॥ सत्यमयिय॥ वं
जूरुष्ट॥ हीतदह॥ नृपवतीरायो॥ अथकर्म॥ अथकसानी॥ यातिवृक्ष॥ वरुसूरुष्ट॥ वरुसूरुष्ट॥
वंजूरुष्ट॥ वमिनकथु॥ धताद्य॥ वीनकर्म॥ उन्मादवृद्धि॥ वायवृक्ष॥ रम्येयूक॥ याह॥ दाता॥ वं

अंशना॥ वाग्मसीरुता॥ अंशका नी॥ दक्षिणवर्तुका ल॥ सदावक्षवृद्धि॥ वंद्यु॥ वचनयद्र॥ अन्य
जात॥ अक्षयवृद्धि॥ अक्षयि॥ वक्षयता॥ अक्षिसुन्दवदही॥ त्रिवेनयूष॥ वंद्यु॥ यक्षक॥
अक्षिसदाय॥ वलवान्॥ हाट्टिय॥ माटववृद्धि॥ नाजयभान॥ घातक॥ वंद्यु॥ माएवियागी॥ सु
न्दवदहा॥ यक्षवर्मा॥ देविद॥ विदसगमनाय॥ अक्षिवका॥ सखवादी॥ वंद्यु॥ नित्ययनक्षीका
मूक॥ उक्षकीरुता॥ भनवहिगा॥ वक्षहीन॥ यक्षवृद्धि॥ सर्वजतवेन॥ अक्षवृद्धि॥ हाथीयासहविवादा॥
विह्वली॥ सर्वलोकमान॥ भीयावानयूका॥ निद्याप्रदह॥ अक्षवृद्धि॥ वीरकर्म॥ घाटववृद्धि॥ या
वक्षसु॥ विह्वलीन॥ सखवादी॥ सोवावानयूक॥ कनहीन॥ हाट्टनायनाभक्षमी॥ वक्षवृद्धि॥

अक्षवृद्धि॥ वाग्मसीरुता॥ अक्षयजात॥ अक्षयवृद्धि॥ वक्षयनीन॥ संप्रामसोत्त॥ असिक्कसुगवा
हाट्ट॥ अक्षवृद्धि॥ इतिवादि॥ अक्षिभनी॥ क्षीलाही॥ अक्षिवानितकर्मकला॥ वक्षवृद्धि॥ धरुसुख॥
वक्षवृद्धि॥ अक्षिवृद्धिवात॥ अक्षवृद्धि॥ दिविह्व॥ अक्षिमीयिया॥ सुसवकजत॥ **अक्षयवृद्धि**
हलमाह॥ सर्वज्वृद्धि॥ देविद॥ वक्षयूययोग॥ क्षीवियागी॥ अक्षवृद्धि॥ सर्वज्वृद्धि॥ नित्यज
ल्यसवक॥ सखहलमि॥ विवृयदह॥ वलाभिका॥ नयूसकसुद्धि॥ सर्वज्वृद्धि॥ अक्षयकालजिवि॥
अक्षिदविद॥ कनवानवदिता॥ नातारागनहिता॥ अक्षमही॥ मिश्रयूयविही॥ सर्वज्वृद्धि॥ गर्हजातकाम॥ सर्व
इक्षवहीन॥ नातजनिह्याद्यानकर्मलक्षक॥ मयलवृद्धि॥ सर्वज्वृद्धि॥ संप्रामकाविद॥ तजस्वी॥ वक्षि

तह ॥ यनयीउक ॥ कनरुकावक ॥ इहलूयुनू ॥ सुर्वजंशु ॥ मातहीत ॥ जीविहिन ॥ यावकर्मनत ॥ यन
श्रीप्रहलमील ॥ सुर्ववृष्टु ॥ वातादिकाशकमल ॥ जूनकधनआशकमन ॥ राजमन्त्री ॥ अथवाधियजन ॥ य
सिद्धयमस्ती ॥ सत्कीलियक ॥ सुर्ववृष्टु ॥ जमीरुयमील ॥ धनजनहीत ॥ वन्धुविहीत ॥ उन्नरुकर्मकली
॥ यनयचरनकमन ॥ यनयचरुवे ॥ यनयाकावराजी ॥ सुर्ववृष्टु ॥ उच्चदेह ॥ लामाधिकमनील ॥ उ
आगनहीत ॥ यूनहीत ॥ दनिड ॥ हागनहीत ॥ सुर्ववृष्टु ॥ न्याययद ॥ वृत्तजालादिदिआविह ॥ य
अलसराव ॥ नानीजनधिय ॥ यलितवृद्धि ॥ जूनकधन ॥ रुयनहीत ॥ सुर्ववृष्टु ॥ जूनिकामूक ॥ विस्
नान ॥ विस्नमनूय ॥ जूनधनी ॥ विसूनाथ ॥ कनहीत ॥ जूनिकाजवलरु ॥ जूनकसूदन ॥ सुर्ववृ

ष्टु ॥ सनावनचिर ॥ याभियकद ॥ याचकहलिजीवन ॥ मलयुकयूननवयुयविधन ॥ सुर्ववृष्टु ॥
नानावागयिजानद ॥ गिरुआमादयुनग ॥ मसाजीविज ॥ सवैययाचक ॥ इधायीजितद ॥ सुर्ववृ
ष्टु ॥ गरुयुद्ध ॥ अंधुर्वद ॥ युर्वकयायानेसर्वयसिद्धि ॥ सुर्ववृष्टु ॥ नानाविशायान ॥ यागवला
॥ सुर्वनायकाजी ॥ गुनजनरुका ॥ पृथमील ॥ दयावान ॥ वंजवृष्टु ॥ सत्यनूय ॥ निष्ठापयद ॥ यालिख
नि ॥ वलवान ॥ महराजी ॥ हाएजनवलरु ॥ विस्नसूदन ॥ वंजवृष्टु ॥ गितिनवाजी ॥ दनिड ॥ यन
नयाचक ॥ सर्वहीन ॥ वन्धुजनमलितकानी ॥ वंजवृष्टु ॥ वरुम ॥ वरुमियद ॥ यनार्थहीनकानी
॥ विगीनयजूरिसांती ॥ वंजवृष्टु ॥ राजमन्त्री ॥ माताउल्यतेनगलनाथ ॥ सर्वलाकयून ॥ जूंवृष्टु ॥

सत्यव्रत॥उन्मादी॥अग्निमातृवल्लरु॥अग्निमाकिपूवृष॥निदाकुलादनिदग्ध॥ ॥**अथमदुदयान**
रुलमाह॥सूर्यज्वलदु॥विद्यानता॥भस्मवत॥कृष्णदह॥वडरुगी॥**अथममति**॥सूर्यज्वलदु॥दाताय
नस्यवक॥वज्रजखराव॥विशुद्धवल॥निर्जतकानविहानी॥सूर्यज्वलदु॥सचक्षुमील॥मनाइयूवृष
॥मानयूक॥विद्यानता॥गजा॥वनयवतविहानी॥सूर्यज्वलदु॥**अथमजनी**॥निद्याननयूक॥स
प्रामभूल॥श्रीयनिकासी॥लारास्यराव॥विशुद्धवल॥अग्निमीरुगी॥सूर्यज्वलदु॥नाजमसुहीअयूक
॥दीपिमील॥**अथमकसीय**॥श्रीनदिन॥निर्भती॥सूर्यज्वलदु॥सदागीधरुमनयिय॥श्रीयूवृष॥निर्भ
नी॥वनयवतवासी॥सूर्यज्वलदु॥निद्यामीवमील॥युगाययूक॥वडरुगी॥नाजवल्लरु॥नाजमसुही

नयान॥अयूक॥सोहागी॥ ॥**अथमरुलमरुलमाह**॥नीष्का॥यनयमगमसंखिय॥लारुवान्॥क
ठिनदह॥सत्यरुवता॥**अथममति**॥अयूकहासी॥वातयिरुक्कनविजितदह॥कार्यचउन॥रुयमील॥कन
कसदसयइभमयिय॥नीनयद्रुद्धि॥यनयनतामकन॥हागी॥यसिद्ध॥हीननखा॥वन्हीन॥विशुद्धयि
॥नीयगमन॥अयूक॥नाताननादियूत॥साहनमील॥कलितकलसजमरुमील॥**अथममकनी**॥राथो
यायि॥अथमवयसिमनसखी॥ककर्मनाभमियाभाति॥ १ ॥**अथमरुलमरुलमाह**॥समर्थ॥विशुद्धलयि
य॥ककसहिष्णु॥हागी॥नरुहंका॥अथमवयसभनसंअयमील॥दययकुल॥उद्याननकार्यकन॥
प्रीमान्॥वातमील॥नाताभनययकन॥अग्निनजखी॥वात॥अथमयुद्धति॥इहिनीजनयिना॥स्यजद्वी

लमरुलमाद ॥ ललितवचन ॥ तर्क ॥ मुहु ॥ गीतविय ॥ उरुसकर्मरु ॥ काशुभासु ॥ वड
लमतोहनकथादी ॥ नातिरु ॥ दानजति ॥ राजनयिय ॥ मीनमलसमर्थ ॥ मिलवि
रु ॥ कनू ॥ यनधनरुगी ॥ उमलगील ॥ मीस्वरुव ॥ नीतिरु ॥ धूरु ॥ जालंकवलगी
ल ॥ वलवान ॥ सुन्दन ॥ कामुक ॥ कीर्तिरुगी ॥ जतिधर्मगील ॥ यकतिनूयुड ॥ सु
नरुक ॥ सजोतिववहनदीन ॥ हारुतिनयिद्वयी ॥ यणीजनक ॥ वातजाग ॥ मन्द
जन ॥ वनीजनया ॥ कथुतलील ॥ ६ ॥ ~~जुधरुलननरुलमाद~~ ॥ जसमदरु ॥ नीति
दीन ॥ ~~रुल~~ ॥ मन्दकर्म ॥ धनकयकन ॥ रुधदरु ॥ स्यदभउरु ॥ वात ॥ श्रुष्य

रुति ॥ कन्दनयिय ॥ उचुदवता ॥ जतिधर्मगील ॥ न्यायरु ॥ रुगी ॥ याकयट ॥ मरु
का ॥ ~~रुलनरु~~ ॥ जतिथिदववाकुरुक ॥ यलित ॥ कर्मगील ॥ गुरुत्यवक ॥ मान्य ॥ य
नयुयुवत ॥ यलितद्वयी ॥ यनगुवेनी ॥ जतुजकन ॥ धनवान ॥ सुद ॥ हारुहाग
यायद्वि ॥ हार्यामूनयनूषनता ॥ जधर्मगीलार्या ॥ ७ ॥ ~~रुधिरुलननरुलमाद~~
॥ सुलविस्तीर्णदीर्घजीव ॥ काधिमन्दामितील ॥ मारुद्वयी ॥ यनजनरुका ॥ सुल
कतकवधुवेद ॥ दीर्घरुकति ॥ गमीनउदन ॥ मश्रुजनिन्यासिका ॥ जयनामने
॥ रुय ॥ रुने ॥ यनविरुगाका ॥ युरवहन ॥ विरुलस्यमनाग ॥ रुतिजनवहन ॥ गु

नूदमी ॥ मित्रद्वयप्रिय ॥ यत्र राश्यावलात्कात्रे लकीयति ॥ कनरु. कदूकवदन ॥ नाजः
सर्वक ॥ वेनप्रिय ॥ सर्वकदागा ॥ बलसु ॥ धर्मवृद्धि ॥ दयावान ॥ रुच्य ॥ ८ ॥ अ
नूलमरुलमारु ॥ वियुनादन ॥ दीर्घसुलमसुक ॥ रुच्यप्रियकीर्ती ॥ अर्थवल्लयुक्त
यि ॥ रुच्यशील ॥ काकनासिका ॥ यथितेनरु ॥ लज्जीशील ॥ सुलहदय ॥ सुलीः
दन ॥ मनुष्यसु ॥ ज्ञातयुगंशी ॥ कामि ॥ मन्दातिवीन ॥ हानिप्रधान ॥ मरुदना
॥ यद्वृक्ष ॥ वरुचमि ॥ कुनवम्काद्यादिनाकर्मकगल ॥ सुकूलरुका ॥ रुच्यप्रिय
॥ मदन ॥ सुखवशुनाग ॥ नाजसंवायाधनयाकि ॥ जातिधर्मनत ॥ २ ॥ मदनल

मदनलमारु ॥ इवजदरु ॥ रुच्यशील ॥ रुच्यकनवदन ॥ वागनागयीति ॥ रु ॥ अरुल ॥ उर्ज
दीर्घनासिक ॥ अल्यवल ॥ रुच्यनरु ॥ नागयुक्तयादसुल ॥ जातिववहानयुलन ॥ दीन
॥ यियासित ॥ सुमीनमलमति ॥ यव्वन ॥ अरुल ॥ अगमेननत ॥ समर्थ ॥ तर्कशु ॥ रु ॥
वदरु ॥ नित्यादिकर्मरु ॥ गीतमदमादिषु ॥ यद ॥ रुच्य ॥ वरुच ॥ हानिनासिक
धर्माधर्मनत ॥ इज्जत ॥ हानिभरु ॥ मन्दसारुव ॥ दर्शनीय ॥ यनयुनमनारुयारुव
ति ॥ अनिन्दक ॥ धनी ॥ धर्मप्रिय ॥ नाजसर्वक ॥ सुल्यदाना ॥ रुगी ॥ अनवल्लरु ॥
१० ॥ मदनलमारु ॥ नीवववहानी ॥ हानिभूनीच ॥ जदवृद्धि ॥ विविगनासि

क॥ तिलक॥ काधयूक॥ अदीकदह॥ अरुवस्थ॥ यनकीनन॥ कनह॥ अकननूचि॥
हीनजातिश्रिय॥ हानिभूउयकालि॥ कयल॥ ४॥ धनहातिकन॥ धनसञ्चयकल॥ निधि
यायि॥ कलुसचकायमादी॥ धनहीन॥ वन्यरुक्ता॥ हानिहिस्यक॥ मान्यधियसर्व॥
गुनसर्वेनूवद्वितकनानि॥ तिन्दक॥ ११॥ अथमीनलनरुलमाह॥ अर्थवान्॥ उमः
नासिक॥ उच्चददय॥ मनुह॥ कथिता॥ यदृ॥ ४॥ सुलादन॥ कीर्तिमान्॥ कटिन॥ विक
ट॥ वदन॥ लम्बाधन॥ मत्स्यमासादिधिय॥ दयाशील॥ सत्यवादी॥ उच्चवेद्वि॥ विधितवा
सिक॥ कूलधर्मन॥ अमादिह॥ यूजीजनक॥ सुशील॥ यद्वद्वि॥ भेर्ययूक॥ वलयूक॥ न

हकीवस्थानीन॥ नानानित्यकर्मयदृ॥ दाता॥ उच्चनर्दना॥ कलन॥ सुरुग॥ अन्तिमी
नलनरुलसमाक॥ १२॥ अथमीनलनरुलमाह॥ मखयूवर्द्धहायारुलमाह॥ अयू
विकतचक्र॥ समर्थ॥ धनी॥ वक्रतासिक॥ यथमहाया॥ सुलदीर्घदह॥ जीव॥ योजन
यक॥ १॥ अथमखयूवर्द्धहायारुल॥ योजयकृति॥ सुवेदन॥ गदहमदगयादाय
लिनयामि॥ सलादकवउनच॥ यदृ॥ ४॥ सुलदीर्घदह॥ अतिवलित॥ २॥ अथमख
वर्द्धहायारुलमाह॥ कयूवर्धु॥ धूमसुलनेज॥ विस्तीर्णकयात्र॥ ददयविष्णुनद॥ मद्य
हीवगग॥ विष्णुननेज॥ विष्णुलहर्दे॥ को॥ ४॥ दहसुन्दन॥ १॥ अथमखयूवर्द्धहायारु

लमाह ॥ स्तुलखर्वदृष्टनीन ॥ अतिगजस्त्री ॥ सुकन ॥ स्तुलककात्र ॥ दधरुवर्कर्ववइ ॥ २ ॥
अथमिधनपूर्वार्द्धेदागारुलमाह ॥ कामनवर्कनन ॥ नस्तुवानरुषदह ॥ गनीनकामन ॥
कामनगील ॥ कामनचनन ॥ असमर्थ ॥ वाकयद् ॥ कामयिय ॥ १ ॥ अथमिधनअयना
र्द्धेदागारुलमाह ॥ ॥ रुतचइ ॥ स्त्रीन ॥ वीन ॥ कामनमनादयराष्टी ॥ वीनारुणील ॥
॥ रुतडाक ॥ ॥ रुतयक ॥ ॥ रुतगनीन ॥ २ ॥ अथकर्कटयुवार्द्धेदागारुलमाह
॥ खर्वगनीन ॥ ॥ रुतमस्तक ॥ मरुहाष्टी ॥ नूकवचन ॥ चक्रनात्मा ॥ धूर्त ॥ रुषुदह ॥
अमरुका ॥ अयदकहीन ॥ १ ॥ दकटअयनार्द्धेदागारुलमाह ॥ अर्कनयिय ॥ गमन

धिया ॥ सुखवदन ॥ उलसजनधिया ॥ उलसजनधिया ॥ दृढदह ॥ २ ॥ सिंदूरचूर्णरुना
 रुलमारु ॥ वाधनकचक्र ॥ अहंकारी ॥ सुलवदन ॥ दीकभजीन ॥ युक्वद्धि ॥ रुगीवद्धि
 स ॥ सुलवद्धि ॥ वलनकार्यकली ॥ १ ॥ सिंदूरचूर्णरुना रुलमारु ॥ सुधिया ॥ निलादिधि
 प्र ॥ इन्द्रोदधिया ॥ अनाहाजन ॥ नूचि ॥ नातावसुधिया ॥ कूवद्धि ॥ कूदभजीन ॥ त्यागी ॥ रुम
 नधिया ॥ सुखी ॥ दृढमिण ॥ २ ॥ सिंदूरचूर्णरुना रुलमारु ॥ दग्नीयदह ॥ मनाहनसुधि
 य ॥ कूभीतंगीन ॥ कूसीधिया ॥ कामनन ॥ गीतनाझधिया ॥ धीमान ॥ १ ॥ सिंदूरचूर्णरुना
 रुलमारु ॥ स्वर्चदह ॥ अश्वमील ॥ अग्रादि ॥ विस्तीर्णमरुक ॥ लोकसंसगत ॥ १ ॥ कयूक ॥ ना

जसवरु ॥ नानाविग्रह ॥ धनकीय ॥ धनवृद्धिकर ॥ हागी ॥ २ ॥ ~~उलूखनी~~ ~~नादुलमा~~
ह ॥ वर्तुलवदन ॥ दीर्घनासिक ॥ १ ॥ ~~रुवर्तुल~~ ~~रुवर्तुल~~ ॥ वमालंकानादिप्रिय ॥ स्कलखर्च
अस्त्रियनूतदह ॥ धनी ॥ मिष्टप्रिय ॥ १ ॥ ~~उलूखनी~~ ~~नादुलमा~~ ॥ वदनलाय ॥ कि
लधनी ॥ दृष्टुदह ॥ वक्रक ॥ धूर्त ॥ वर्तुनचक्र ॥ सुभामिक ॥ विबलयादांगुलि ॥ २ ॥ ~~व~~
~~धिक~~ ~~यूवनादुलमा~~ ॥ याम्बोजक ॥ मध्यादिगनन ॥ नरावनात्कानयनूमायाडा
समर्थ ॥ मन्दप्रकाश ॥ मीनग ॥ धनी ॥ १ ॥ ~~वधिक~~ ~~यूवनादुलमा~~ ॥ स्कलसदृश

वर्तुनचक्र ॥ नाजसवक ॥ मली ॥ मिष्टवान ॥ उरुवक्रचक्र ॥ २ ॥ ~~धनयूवनादुलमा~~
माह ॥ अष्टस्कलवदन ॥ खर्चरुह ॥ खल्यवश ॥ स्कलरुत ॥ मिष्टुकावायिरुमायाः
गी ॥ खगमील ॥ १ ॥ ~~धनयूवनादुलमा~~ ॥ विष्णुवचक्र ॥ अनन्तरुज ॥ १ ॥ ~~रु~~
रु ॥ दृष्टुदह ॥ वचनमधूना ॥ धामिक ॥ अतिदाना ॥ कीलिवान ॥ २ ॥ ~~मकनयूवनादुलमा~~
लेमाह ॥ दृष्टुवर्तु ॥ दीर्घवश ॥ धनवान ॥ नरायावचनकने ॥ कामवदह ॥ धूर्त ॥ स्वामि
॥ मिष्टदशरुका ॥ दधनीय ॥ दीर्घदह ॥ उर्वनासिक ॥ १ ॥ ~~मकनयूवनादुलमा~~

स्त्री ॥ समर्थ ॥ नाजसवक ॥ ह्नातिवल्लरु ॥ धर्मवृद्धि ॥ खीयजनेज्जादनकल ॥ ३ ॥ **द्वयस्य** यथ
मडकालरुलमाह ॥ मयादियातनत ॥ मसिदिहाजनयिय ॥ वा ॥ स्त्रीनत ॥ राय्यवियाग
तक ॥ विष्ठादि ॥ सुवर्णुदि ॥ अलंकात्रयिय ॥ स्त्रीस्वरावयवरात्री ॥ १ ॥ **द्वयस्य** द्वितीयदक
लरुलमाह ॥ मइदरु ॥ राय्यवल्लरु ॥ धनवान् ॥ सुन्दन ॥ दुवयूक ॥ सामर्थयूक ॥ स्नातयि
य ॥ वष्ठादि ॥ ह्स्वतयिय ॥ दृष्टविरु ॥ मभावि ॥ २ ॥ **द्वयस्य** तृतीयदकालरुलमाह ॥ यति
ग ॥ रुमभील ॥ गिजहीन ॥ नानास्वराव ॥ धनसंचयगील ॥ दृष्टइ ॥ खनक ॥ दृष्टवयसराग

हीन ॥ ३ ॥ **मिथूनस्य** यथमडकालरुलमाह ॥ सुलउरुमभील ॥ धनी ॥ उर्वदरु ॥ धूर्ल ॥ स
म्ययूक ॥ अलंकात्रयिय ॥ नाजमान्यप्रायि ॥ वागी ॥ १ ॥ **मिथूनस्य** द्वितीयदकालरुलम
ह ॥ कामन ॥ मनाहन ॥ सुन्दनदरु ॥ खर्ववदन ॥ कामनर्कग ॥ दसुयादादिकामन ॥ धनी
॥ सीस्यवृद्धि ॥ धीमान् ॥ तजस्वी ॥ सुकीर्ति ॥ २ ॥ **मिथूनस्य** तृतीयदकालरुलमाह ॥ सलातः
कचइ ॥ सुन्दनदरु ॥ सुलमरुक ॥ वइवेनीयूक ॥ दीर्घदरु ॥ अमिधनख ॥ अमिद्यवन
॥ यंचनधन ॥ कउमरुनभीन ॥ अधवती ॥ ३ ॥ **कर्कटस्य** यथमडकालरुलमाह ॥ द

वरुकि नत॥ वाक्कनैरुकि नत॥ वक्त्रन॥ लो न वलुदह॥ कर्मभीन॥ यनस्य॥ यष्टिग॥ सुदह
सुदह॥ सुदह॥ लीही॥ दानभील॥ निदायिय॥ स्त्रीनसग॥ गर्वी॥ १॥ कर्कटस्यद्वितीयदका
लरुलमाह॥ लाही॥ दानसील॥ निदायिय॥ स्त्रीनसग॥ गर्वी॥ हाएयूक॥ अलंका ननभील॥
वक्त्रनयकृति॥ नागयीति॥ २॥ कर्कटस्यद्वितीयदका गलमाह॥ स्त्रीलालुधनी॥ यन
दमयिय॥ मययिय॥ सुभील॥ वनकी दानत॥ जलकी दायिय॥ कुनवश॥ मानी॥ ३॥ सि
हस्ययथमदका गलमाह॥ खागी॥ गुरुका॥ सर्वजुजन॥ वरुनलनयूक॥ वरुमिग॥

वरुकीयूक॥ वरुभायकालन॥ सुनूटयसवक॥ सुगजा॥ १॥ सिंहस्यद्वितीयदकोल
रुलमाह॥ सुन्दनदह॥ कामभील॥ त्यागी॥ दृढवृद्धि॥ सुलदह॥ वसुलंका लयिय॥ हा
गी॥ वद॥ धर्मजुतियिय॥ वरुमधा॥ २॥ सिंहस्यद्वितीयदकोल रुलमाह॥ वीनवृद्धि॥
कलभील॥ हागी॥ धूर्त्यका नमहावृद्धि॥ खर्वदह॥ कीलिमात्॥ वरुयूक॥ अरुंका नी॥ ३
॥ कर्कटस्ययथमदका गलमाह॥ कुरुदह॥ गुरुनवयन॥ नयनभील॥ दीर्घदह॥
कामनभीनीन॥ स्त्रीधननधनी॥ वन्धूयिय॥ दीर्घमस्तक॥ दीर्घवदन॥ मिष्टयियनवश॥

१ ॥ कन्यायादिगीयदका नरुलमाह ॥ यनदधयमनगील ॥ दीकिमान ॥ स्यामगील
॥ सन्यनदह ॥ अतिपुत्रवृद्धिमतिवत् ॥ अशुधवलगील ॥ यथालंका नयिय ॥ २ ॥ कन्या
यादिगीयदका नरुलमाह ॥ कामदह ॥ दणसुकीनजक ॥ यनधननधनी ॥ सीधिय ॥
गीतधिय ॥ नाजवल्लह ॥ स्वर्गसुन्यनदगीनीदह ॥ काभी ॥ कुलचइ ॥ कुलमरुक ॥ ३ ॥
उलस्ययथमदका नरुलमाह ॥ कामदवसदधदह ॥ सुकीनजक ॥ गमलधिय ॥ मल्लन
वि ॥ वननयद ॥ रुमुदीकदह ॥ अयविकरु ॥ स्मिन्नकर्मा ॥ सीर्यवृद्धि ॥ वृद्धिगील ॥ १ ॥

उलस्यदिगीयदका नरुलमाह ॥ नककुलचइ ॥ रै ॥ ननदगीनीयदह ॥ नाजसवक ॥
वइराभीयसिद्ध ॥ सयूयक ॥ स्वजाधर्मनयन ॥ यलित ॥ २ ॥ उलस्यदिगीयदका न
रुलमाह ॥ वञ्चलस्यराववृद्धि ॥ धूरु ॥ विस्वासदानी ॥ कृत्यीगदह ॥ यतिवृद्धि ॥ लल्यवृ
द्धि ॥ मिश्रीन ॥ धनीनजसत्यी ॥ इडवृद्धि ॥ कुमलगील ॥ ३ ॥ दधिकस्ययथमदका नरुल
माह ॥ गोवदह ॥ दृष्टवृद्धि ॥ काधि ॥ स्यामगूल ॥ इनयइ ॥ स्वर्गविस्तीर्णदह ॥ कनरुगी
ला ॥ १ ॥ दधिकदिगीयदका नरुलमाह ॥ सस्यायनवधानयिय ॥ चञ्चनदृष्टी ॥ स्वर्गसद

मदह॥मनाहन॥यनधनतयक॥यगुलवृद्धि॥कार्यवडल॥ २॥**द्विचिकसहनीयदका**
लरुलमाह॥मन्दसम॥मधुनाग॥यानहिंसक॥यिगनयक॥कुलादन॥गङ्गनागी॥सज
वहन॥सुनवाह॥सुलददय॥सुलादन॥स्यामदह॥ ३॥धनस्यवधमदकालरुल
माह॥वर्जवहन॥वर्जददय॥स्नानि॥अष्ट॥॥ग॥हनायावयक॥कामनददवदन॥आक
मान्य॥ १॥**धनस्यद्विचिकसहनीयदका**लरुलमाह॥ग॥सुहृ॥अनकयहृकालि॥व्रीहिन॥मनु
हजत॥अष्ट॥नानागीर्थस्नानसर्वी॥ २॥**धनस्यद्विचिकसहनीयदका**लरुलमाह॥हाहमश्वश्र

॥दक॥साधुमान्य॥धर्मलील॥गर्वी॥यवकीथिय॥नूयवान॥जसह्यी॥ ३॥**मकनस्यव**
धमदकालरुलमाह॥दीर्घबाहृदय॥कृष्णवर्णदह॥विष्णाननग॥विक्रीलुडदनु॥धूरु
॥नमनीठदह॥हासितववन॥स्त्रीयुक्ति॥असत्कर्मणाधनसंवय॥ १॥**मकनद्विचिक**
सकालरुलमाह॥कृष्णदह॥धूरु॥कामलहारी॥वश्रनयनस्त्रीहानी॥यनधनहानी॥
अनगदौनालजघ्न॥इज्जत॥कदकहारी॥यनदमगमन॥ २॥**मकनस्यद्विचिकसहनीयदका**
लरुलमाह॥वर्जलालाठ॥यायात्मा॥स्वल्पउच्चदह॥यिर्जमनजीवानवव॥यनदम